युग परिवर्तन में छत्तीसगढ़ की बहिनों की अग्रणी भूमिका होगी 3

युवा युग सृजेता समारोह सिलीगुड़ी 4

केरल में अनेक संगठन मिलकर कर रहे हैं युगशक्ति का विस्तार 7

वर्ष-2023 में नई संभावनाएँ साकार होंगी

8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जनवरी 2023

वर्ष : 35, अंक : 14
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2023
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

महाकाल का परिवर्तन चक्र

अगले दिनों युग परिवर्तन की पुण्य वेला कितने तीव्र वेग से उगती चली आ रही है, इसका अनुभव कोई भी सूक्ष्म बुद्धि वाला अपनी दूरदर्शी आँखों से सहज ही देख सकता है। पर्दे के पीछे महाकाल क्या-क्या सरंजाम जुटा रहा है, उसका उल्लेख करना समय से पूर्व की बात होगी, शायद लोग उस पर विश्वास भी न करें, पर जिन्हें हमारे ऊपर विश्वास हो उन्हें इतना तो नोट कर ही लेना चाहिये कि अगले दिनों घटनाक्रम इतनी तेजी से घूमेगा और उसकी प्रतिक्रिया इतनी अद्‌भुत होगी कि आज का वैयक्तिक जीवन क्रम और समाज का स्वरूप अगले दिनों लड़खड़ा कर औंधे मुँह गिर पड़ेगा। यह निश्चित तथ्य है कि आज की वैयक्तिक जीवन-पद्धति और समाज की परिपाटी कुछ ही दिनों में इतनी अधिक बदल जायगी कि परिवर्तन से पूर्व और पश्चात् की तुलना करने वालों को स्तब्ध, अवाक् रह जाना पड़ेगा।

हम कितनी ही बार कह चुके हैं कि अगले तीस वर्ष प्रसव पीड़ा जैसे हैं। इसमें भारी उथल-पुथल होगी और ऐसे संघर्ष होंगे, जिन्हें पौराणिक समुद्र मंथन की तुलना दी जा सकती है। इन दिनों के संघर्ष का लाभ उठाने के लिए असुरता अपनी घात लगायेगी और देवत्व भी अपने परिपोषण की दिशा में उसे खींचेगा। अन्तिम परिणाम के बारे में किसी को भी संदिग्ध नहीं रहना चाहिए। भगवान ने कच्छप रूप धारण करके मंदराचल को भूमि में धँस जाने से रोका था, भगवान शंकर ने विष पान किया था। सूर्य और विष्णु ने मिलकर राहु-केतु की दुरभि संधि को निष्फल किया था।

ऐसे ही प्रकरण वर्तमान युग के संघर्ष में प्रस्तुत होंगे। उतार-चढ़ाव की परिस्थितियाँ रंग बदलती रहेंगी, पर चूँकि यह विशाल अभियान ईश्वरीय प्रेरणा और इच्छा के अनुरूप चल रहा है, उसमें स्फुरण और मार्गदर्शन सूक्ष्म जगत के प्रकाश केन्द्र से आ रहा है, महाकाल उसका संचालन एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के अनुरूप कर रहा है, इसलिए इसके असफल होने का कोई कारण नहीं है, न हीं यह आशंका है कि उसकी प्रतिक्रिया असुरता की दृष्टि में उल्टी हो जाएगी। दश अवतारों का प्रकरण जब उलटते हैं तो यही प्रतीत होता है कि जब-जब देवत्व लड़खड़ाया है तो उसकी सहायता के लिये कोई अनोखा प्रकाश कहीं से उगा और उसने असम्भव को सम्भव के रूप में परिणित कर दिया। अगले दिनों भी कुछ ऐसे ही चमत्कार प्रस्तुत हों, तो उसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं समझी जानी चाहिए।

नेतृत्व हमें ही करना होगा

विश्व इतिहास पर गहराई से नजर डालने पर यह निष्कर्ष सहज ही निकल आता है कि अतीत में जब कभी भी भावनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया गतिशील हुई है तो उसका संचालन भारतभूमि से ही हुआ है। यहाँ की मिट्टी में अपनी कुछ विशेषता है, जो अनादि काल से चली आ रही और अनन्तकाल तक चलती रहेगी। महामानवों का, विचार पद्धतियों का लोकमानस को प्रभावित करने का श्रेय सदा से इस भूमि को मिलता रहा है और आगे भी वैसा ही होगा।

जिस विश्वव्यापी महान परिवर्तन की वेला इन दिनों सामने खड़ी है, उसका उद्‌भव एवं संचालन भी इसी भूमि से होना है, सो हो भी रहा है। युग निर्माण योजना का ज्ञानयज्ञ, विचार क्रान्ति अभियान जिसके साथ बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक परिवर्तनों की सुसंबद्ध शृंखला जुड़ी हुई है, इसी भारत भूमि से गतिशील हो रहा है। कहना न होगा कि अगले दिनों यह बीज विशाल वट-वृक्ष का रूप धारण करेगा।

अभी यह आरम्भ हिन्दू धर्म और भारत भूमि से ही उग तथा पनप रहा है, समय के साथ-साथ यह संसार के हर देश तथा हर धर्म तक व्यापक-विस्तृत होता चला जायेगा। नवयुग का सूर्य भारत तक चमक कर न रह जायेगा। इसका उदय पूर्व में हो रहा है पर समयानुसार विश्व के हर कोने में इसकी प्रभा किरणें फैलेंगी और वर्तमान अंध तमिस्रा का निराकरण करके ही रहेंगी।

ऐसी होंगी भावी व्यवस्थाएँ

बदलते युग के मुख्य परिवर्तन होंगे-

(1) धन पर समाज का स्वामित्व, व्यक्तिगत सम्पदा का अन्त (2) जाति और लिंग के नाम पर चलती जाने वाली असमानता का अन्त और मनुष्यमात्र के समान नागरिक अधिकारों की प्रतिष्ठापना (3) विश्व बन्धुत्व की मान्यता, प्रत्येक क्रिया-पद्धति में सहकारिता का, कौटुम्बिकता की प्रवृत्ति का प्राधान्य, विश्व-राष्ट्र की स्थापना, समस्त संसार का एक शासन, एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक आचार आदि एक्य सूत्रों का सार्वभौम प्रचलन। (4) व्यक्तिवाद का अन्त, समूहवाद का उदय। अधिकार की उपेक्षा और कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा-तत्परता, उदारता और सज्जनता की मान्यतानुसार मानवीय गरिमा का मूल्यांकन।

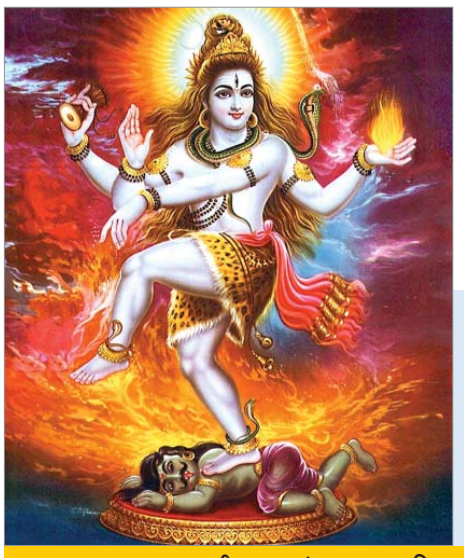

महाकाल की योजना के अनुरूप ही बदल रही है दुनिया

संकेतों को समझो

युग की आवश्यकता के अनुरूप स्वयं को बदलने तथा महाकाल के सहयोगी बनने में ही समझदारी है।

- प.पू. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी

वाङ्मय खण्ड 28 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-1), पृष्ठ 6.44-50 से संकलित, सम्पादित

यह चार आधार भावी युग निर्माण के मूलभूत आधार, तथ्य एवं आदर्श होंगे। इन्हीं सिद्धान्तों पर व्यक्ति के अधिकार एवं कर्त्तव्य निर्धारित किये जायेंगे। प्रथा परम्परा, कानून एवं आचरण इन्हीं सिद्धान्त पर खड़े किये जायेंगे। समाज का स्वरूप, शासन का ढाँचा इन्हीं प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विनिर्मित होगा। नवयुग इन्हीं आधारों को मूर्तिमान करने के लिए द्रुतगति से दौड़ता चला आ रहा है। समय की गति को पहचानना ही काफी नहीं, उसके अनुरूप ढलना भी आवश्यक है। सम्भव हो तो 'मानव में देवत्व का उदय' कर सकने और 'धरती पर स्वर्ग का सृजन' कर सकने में समर्थ इस दिव्य अवतरण का स्वागत-सत्कार करने के लिए हमें अर्घ्य-आरती लेकर आगे बढ़ चलने का भी साहस एकत्रित करना चाहिए।

उपार्जन, पूँजी और श्रम का राष्ट्रीयकरण

उपार्जन, पूँजी और श्रम का राष्ट्रीयकरण होने ही जा रहा है। यह व्यवस्था सारे विश्व में बन कर रहेगी। इसे साम्यवाद, समाजवाद, अध्यात्मवाद, अपरिग्रह, अनिवार्य दानशीलता आदि किसी भी नाम से पुकारा जाय, होना यही है। इसके बिना आज के व्यापक पाप, ताप और शोक सन्ताप का और कोई हल नहीं। हमारे भावनात्मक, मानसिक, व्यावहारिक, पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे में अगणित विकृतियाँ धन के स्वेच्छाचारी उपार्जन और उपभोग ने उत्पन्न की हैं। इस तथ्य को कुछ ही दिनों में हर कोई समझ लेगा और स्वेच्छानुसार वर्तमान अर्थ व्यवस्था को बदलने के लिए पूरा उत्साह प्रकट करेगा।

समान नागरिक अधिकार होंगे

सत्कर्मों के कारण किसी को सम्मान मिले और दुष्कर्मों से कोई तिरस्कृत किया जाए, यह बात समझ में आती है, पर तथाकथित आधाररहित जाति-पाँति की कपोल कल्पना को पत्थर की लकीर मानते हुए किसी को ऊँच, किसी को नीच माना जाए; इसी आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच विभेद की दीवारें खड़ी की जाएँ, तो इसे हर दृष्टि से अनुचित कहा जायगा। इस अनौचित्य का अगले दिनों अन्त ही होकर रहेगा।

नारी सशक्तीकरण

स्त्री और पुरुषों के अधिकार प्रायः समान हो जायेंगे। आज के समाज में पुरुष को स्त्री की तुलना में अनेक विशेषाधिकार मिले हुए हैं। गृहस्थ जीवन के इस असंतुलन को नारी के लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था करके पूरा किया जाएगा। गृहस्थ बसाने के लिए कदम उठाने के साथ-साथ हर पुरुष को प्रतिबंध स्वीकार करना पड़ेगा कि सन्तानोत्पादन के कारण प्रस्तुत कठिनाइयों को वहन करने में नारी को जो विशेष क्षति उठानी पड़ती है, उसकी पूर्ति उसे विशेष सुविधायें देकर पूरी करेगा। इस प्रकार आज जो विशेष लाभ नर को मिलते हैं वे अगले दिनों नारी के पक्ष में चले जायेंगे।

आस्तिकता का आदर्श रूप उभरेगा

अगले दिनों समस्त विश्व सच्चे अर्थों में धर्मात्मा एवं आस्तिक बनेगा और इसी धरती पर मनुष्य में देवत्व के उदय और समाज में स्वर्गीय वातावरण का आनन्द बिखरा हुआ परिलक्षित होगा। हर व्यक्ति उदार दृष्टि से लोकमंगल को अपना जीवन लक्ष्य स्वीकार करेगा और अपनी योग्यता, क्षमता एवं विभूतियों को नियोजित करने में अपने अस्तित्व की सार्थकता अनुभव करेगा। अगला समय ऐसी ही उदार मान्यतायें जनमानस में भरने के लिये द्रुत गति से चला आ रहा है। तब स्वार्थी, लोभी और मोहग्रस्त व्यक्ति घृणित एवं दुष्ट समझे जायेंगे और उन्हें पग-पग पर तिरस्कृत, बहिष्कृत किया जायगा।

आज तो सम्पत्तिवानों का सम्मान होता है, कल समाज के लिए व्यक्तिगत सुविधाओं का उत्सर्ग करने वाले ही श्रद्धास्पद होंगे। ईश्वर भक्त और धर्मात्मा तब कोई ऋद्धि-सिद्धि बखानने के जाल-जंजाल सुनने वाला ढोंगी नहीं कहला सकेगा। पूजा-पाठ से नहीं, व्यक्ति की गरिमा धर्माचरण तथा उसके आदर्शवादी सद्‌भाव सम्पन्न जीवन क्रम से ही नापी, आँकी जायेगी।

यह एक तथ्य है कि व्यक्तिवादी स्वार्थपरता समाज की प्रगति और सुरक्षा के लिए भयानक अभिशाप है। मनुष्य की इस मनोवृत्ति को बदलना ही पड़ेगा, अन्यथा सर्वत्र अपराध, अनाचार ही बढ़ते दिखाई देते रहेंगे।

युग परिवर्तन अवश्यम्भावी है। ईश्वर की इच्छा यही है, सो उसके सारे सरंजाम क्रमशः अनायास ही जुटते चले जा रहे हैं। अगले दिनों अगणित प्रसुप्त आत्माएँ एक दैवी आवेश में आयेंगी और नव निर्माण के लिए रचनात्मक एवं संघर्षात्मक ऐसे महान कार्य व्यक्तिगत और समूहगत रूप से सम्पन्न करेंगी, जिसका प्रभाव-परिणाम देखकर हर किसी को स्तब्ध रह जाना पड़ेगा। युग-निर्माण आन्दोलन का कार्य या लेबिल इन पुण्य प्रयोजनों से सम्बद्ध भले ही न हो, वे स्वयं इस अभियान के कार्य क्षेत्र से प्रत्यक्षतः भले ही परिचित न हों, पर निश्चित रूप से उनकी प्रेरणा का स्रोत वही रहेगा, जिसके प्रकाश से हम सब प्रस्तुत अति महत्त्वपूर्ण क्रिया-कलाप सम्पन्न करने में संलग्न हैं।

युग चेतना के इस वासंती प्रवाह का पूरा लाभ उठायें

अभीष्ट संकल्प की सिद्धि के लिए नई सोच के साथ प्रगतिशील एवं प्रभावशाली योजनाएँ अपनाएँ

वसंत एक हूक है

26 जनवरी 2023-वसंत पंचमी के दिन हम अपने आराध्य, जीवन के सर्वोच्च प्रेरणास्रोत, पथ प्रदर्शक परम पूज्य गुरुदेव का आध्यात्मिक बोध दिवस मनाने जा रहे हैं। वैसे तो वसंत ऋतु अपने आप में विलक्षण है। यह नवजीवन का, चेतना के प्रवाह का प्रतीक है, लेकिन युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित सृजन सेनानियों के लिए यह वसंत अत्यंत विशेष है।

परम पूज्य गुरुदेव अंतःकरण में लोकमंगल के लिए उठती हूक को भी जीवन का वसंत मानते रहे हैं। वे कहते रहे हैं कि जब यह वसंत जीवन में आता है तो मनुष्य को निहाल कर देता है। तब वह सामान्य मानवीय जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा बड़े उद्देश्यों के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता है। पेट-प्रजनन तक की सोच से ऊपर उठकर समाज, राष्ट्र और संस्कृति के उत्थान के लिए साहसी कदम बढ़ाने के लिए आगे बढ़ता जाता है।

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि यह वसंत आया था समर्थ रामदास के जीवन में, जब विवाह मंडप में बैठे पुरोहित ने कहा, लड़का-लड़की सावधान। रामदास ने सोचा कि मेरा जीवन पारिवारिक बंधनों में बँध गया तो फिर मैं समाज को मुगलों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के प्रयास कैसे कर पाऊँगा? वे विवाह-मंडप से उठ खड़े हुए। आगे चलकर उन्होंने जगह-जगह व्यायामशालाएँ आरम्भ कर शिवाजी जैसे योद्धाओं को गढ़ना आरम्भ कर दिया।

वसंत आया था स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन में। बालक नरेन्द्र जब स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास जीवन-यापन का साधन माँगने गया तो स्वामी जी ने सीधे माँ काली से ही याचना करने को कहा। स्वामी जी माँ के मंदिर में पहुँचे, बार-बार पहुँचे, लेकिन उनके मन-मस्तिष्क में छाए वसंत के प्रभाव से वे नौकरी जैसी छोटी चीज माँगने की अपेक्षा सर्वसमर्थ माता से बुद्धि, विवेक, ज्ञान प्राप्ति का आशीर्वाद ही माँगते रहे।

यह वसंत परम पूज्य गुरुदेव के जीवन में हर पल हिलोरें लेता रहा। हम तो उनके प्रचण्ड भागीरथी तप, युग निर्माण के लिए उनके द्वारा जमीन-जायदाद के दान, परम वन्दनीया माताजी द्वारा तपोभूमि निर्माण के लिए सारे आभूषणों के दान जैसी घटनाओं की ही चर्चा करते हैं, लेकिन महत्त्व की बात यह थी कि यह तप और दान भी उनकी अपनी किसी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से परे था। उन्होंने अपनी समस्त कामनाएँ उसी दिन दादा गुरु स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी के चरणों में समर्पित कर दी थीं, जिस दिन वसंत पंचमी-1926 को उनके दर्शन हुए। वे तो स्वयं को 'बिका हुआ बैल' बताते रहें हैं, जिसकी हर गतिविधि अपने मालिक के इशारों के अनुरूप ही हुआ करती है।

गायत्रीमय हो रहा है समाज

इन दिनों यह वसंत परम पूज्य गुरुदेव के अनुदान और परम वन्दनीया माताजी के स्नेह से अभिभूत नवयुग सृजन सेनानियों में पूरी तरह से छाया दिखाई दे रहा है। जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्य को देखते हुए चहुँओर परिजनों की श्रद्धा-सक्रियता में एक ज्वार-सा आ गया है। वैश्विक परिदृश्य में घट रहे घटनाक्रम परम पूज्य गुरुदेव के 'इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' के संकल्प को सच होने का सुखद संकेत दे रहे हैं। इससे परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस (अखण्ड दीप प्राकट्य का दिन बसंत पर्व-1926) एवं परम वन्दनीया माताजी के लौकिक अवतरण वर्ष (भाद्रपद पूर्णिमा-1926) की शताब्दी -सन् 2026 तक युग निर्माण आन्दोलन को घर-घर तक, जन-जन तक पहुँचा देने का संकल्प और उत्साह भी बढ़ता ही जा रहा है।

अपने मिशन के लगभग हर नए चरण का शुभारम्भ वसंत पर्व से ही होता रहा है। परम पूज्य गुरुदेव के समय से लेकर आज तक हर वसंत पर्व पर नए-नए संकल्प उभरे हैं, जो आगामी वर्ष की सक्रियता का आधार रहे हैं। गतवर्ष परम वन्दनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष की योजनाओं के अन्तर्गत 'नारी सशक्तीकरण वर्ष' मनाने का संकल्प उभरा। पूरे देश में इसके लिए शानदार वातावरण तैयार हुआ। पहले शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा पूरे देश में बहिनों के आवासीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न कराए गए, जो बहुत लोकप्रिय रहे। तत्पश्चात् शान्तिकुञ्ज द्वारा हर क्षेत्र में नारी प्रधान गायत्री महायज्ञ एवं विशिष्ट सम्मेलनों की शृंखला चल पड़ी, जो बड़े जोश और उत्साह के साथ सम्पन्न हो रही है। इनके माध्यम से शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली और स्थानीय आयोजक बहिनों ने प्रगतिशील नारी की सक्रियता, उसके विचार और स्वरूप का आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

इस वर्ष सम्पन्न हो रहे 24 कुण्डीय से लेकर 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञापुराण कथा आयोजनों की संख्या भी पिछले वर्षों की तुलना में कहीं अधिक है। केन्द्रीय टोलियों द्वारा कार्यक्रम तो सम्पन्न कराए ही जा रहे हैं, स्थानीय जिला एवं क्षेत्रीय संगठनों ने भी 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना' अभियान से लेकर 5 और 9 कुण्डीय यज्ञों की शृंखला चलाकर घर-घर को गायत्रीमय बनाने में कोई कोर-कसर नहीं रखी है। शान्तिकुञ्ज में कर्मठ कार्यकर्त्ता बहिन-भाइयों के दो शिविर दिसम्बर 2022 में सम्पन्न हुए। इनमें उभरे संकल्पों को देखते हुए यह बात सुनिश्चित रूप से कही जा सकती है कि वर्ष-2023 में यह उत्साह कई गुना बढ़ेगा। जन्मशताब्दी की विशिष्ट वेला में हर नैष्ठिक परिजन अपने पूरे मनोयोग के साथ अपना अधिकतम श्रम, समय, साधना युगशक्ति गायत्री के व्यापक विस्तार के लिए समर्पित करने हेतु उत्साहित है।

लक्ष्य पर ध्यान दें

युग परिवर्तन एक महान दैवीय संकल्प है, जो सुनिश्चित रूप से पूरा होकर रहेगा। (देखें इसी अंक का पृष्ठ 1) लेकिन युगचेतना विस्तार के भागीरथी अभियान को लक्ष्य तक सफलतापूर्वक पहुँचाना भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। वसंत की इस ऊर्वर वेला में यदि हम व्यक्तिगत और संगठनात्मक तौर पर अपने कार्यों की समीक्षा करें और बेहतर सफलता के लिए कदम उठाएँ तो निःसंदेह युग निर्माण आन्दोलन की सूत्र संचालक सत्ता हमें प्रेरणा-प्रकाश प्रदान करेगी।

समीक्षा करें : हम अपनी सक्रियता की ओर देखें। परम पूज्य गुरुदेव ने शक्तिपीठ और प्रज्ञा मण्डलों को युग सैनिकों की छावनी कहा है। प्रव्रज्या हमारी सक्रियता का मूल है। लेकिन कितने शक्तिपीठ हैं, जिनके पास पर्याप्त मात्रा में ऐसे समयदानी हैं जो नियमित रूप से जनजागरण के लिए घर-घर सम्पर्क अभियान के लिए निकलते हैं? क्या हमारे शक्तिपीठ आम मंदिरों की तरह देवालय मात्र नहीं बनते जा रहे?

हम यज्ञीय कार्यक्रम सम्पन्न करा लेने में ही अपनी सफलता मान लेते हैं। यह भूल जाते हैं कि हमारा लक्ष्य जन-जन के विचार, संस्कारों को बदलना है। हमारा लक्ष्य परिवार निर्माण का है। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सैकड़ों लोग परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा से प्रभावित होते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हमने हर क्षेत्र में हजारों-लाखों लोगों को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जोड़ने का प्रयास किया है। लेकिन क्या हम उन्हें नैष्ठिक गायत्री उपासक या अपने गायत्री परिवार का नैष्ठिक सदस्य बना सके? जुड़ते समय जो उम्मीदें उनके मन में जागी थीं, उस दिशा में उन्हें कितनी सफलता मिली?

हम समीक्षा करें तो देखेंगे कि हमारी सक्रियता प्रचारात्मक कार्यों पर ही अधिक होती है। एक निशानेबाज अपना निशाना साधने के लिए एक ही निशाने पर निरंतर अभ्यास करता है। वर्षों के अभ्यास के बाद कोई खिलाड़ी अच्छा खिलाड़ी बन पाता है। परीक्षा में पास होने के लिए एक विद्यार्थी को अपनी पुस्तक को न जाने कितनी बार दोहराना पड़ता है।

हम धरती से पानी निकालने के लिए दिन-रात गड्ढे खोदे जा रहे हैं, लेकिन भूल इतनी-सी हो रही है कि हर बार दो-चार फीट गड्ढा खोदने के बाद उसे छोड़ देते हैं और फिर एक नई जगह चुन लेते हैं। जरा सोचिए! क्या इस प्रकार धरती से पानी निकाल पाना संभव है?

गहरे उतरें

यदि हमें नवयुग सृजन के अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करना है तो अपने मूल लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रयास करने होंगे। जो लोग किसी न किसी माध्यम से मिशन से जुड़ रहे हैं, उनसे बार-बार सम्पर्क करने की योजना बनानी होगी। एक बार महात्मा बुद्ध के कुछ अनुयायी एक भूखे राहगीर को उपदेश दे रहे थे, पर वह किसी उपदेश पर ध्यान ही नहीं दे रहा था। भगवान बुद्ध ने शिष्यों को समझाया कि वह भूखा है। पहले उसे भोजन की आवश्यकता है, फिर प्रवचन की।

आज के दुःखी-संतप्त समाज की पहली आवश्यकता प्यार और संवेदनाएँ हैं। टूटते-बिखरते परिवारों का, बच्चों के बिगड़ते संस्कारों का उपचार गायत्री उपासना और परम पूज्य गुरुदेव के विचार ही हैं। लेकिन अपनी आत्मीयता और संवेदनायुक्त सद्भावना के साथ उनका हितैषी बनकर ही उन्हें यह विचार दिये जा सकते हैं। उनकी जीवन शैली में गायत्री उपासना एवं स्वाध्याय को स्थान दिलाने के लिए बार-बार प्रेरणा-प्रोत्साहन का क्रम अपनाना होगा।

इस योजना पर विचार करें

वसंत पर्व की वेला है। इसमें एक योजना पर विचार अवश्य करें। सार्वजनिक कार्यक्रमों में यज्ञ, दीक्षा, संस्कार, शिविर, पत्रिकाएँ आदि किन्हीं भी माध्यमों से जो भाई-बहिन जुड़ रहे हैं, उस सबसे कम से कम एक वर्ष तक नियमित संपर्क की व्यवस्था बनाएँ। इसके लिए हर सक्रिय कार्यकर्त्ता को 5 से 10 लोगों के साथ आत्मीयतापूर्ण संपर्क की जवाबदारी दी जा सकती है।

जिन्हें एक क्षेत्र में यह जिम्मेदारी सौंपी जा रही है, ऐसे 10-20 लोगों की महीने-दो महीने में गोष्ठी हो। उनसे संपर्क में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी ली जाए, लोगों की जिज्ञासा का समाधान किया जाए, सम्पर्क अभियान को प्रभावशाली बनाने वाले सूत्र उन्हें बताए जायें।

जनसंपर्क के लिए प्रज्ञा अभियान का सहारा लिया जाए। यह लोगों को शक्तिपीठ/शाखा/संगठन की ओर से प्रसादरूप में निःशुल्क दिया जा सकता है। (नोटः प्रसाद का प्रभाव अलग होता है।) प्रज्ञा अभियान में गुरुदेव के विचार और समाचारों के सहारे कोई नया से नया व्यक्ति भी आसानी के साथ मिशन की चर्चा आरम्भ कर सकता है। जिन घरों में जाया जा रहा है, उन्हें उत्साहवर्धक संस्मरण, विचार, समाचार बता सकता है।

• इस पंद्रह दिवसीय जनसंपर्क अभियान में लोगों की कुशलक्षेम पूछी जा सकती है, उन्हें उपासना, साधना, स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। • उन घरों में बलिवैश्वदेव यज्ञ की परम्परा आरंभ कराई जा सकती है। • जन्मशताब्दी वर्ष-2026 एवं विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों में भागीदारी के लिए उनमें उत्साह जगाया जा सकता है। इस निमित्त ज्ञानघट की स्थापना की जा सकती है।

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

इन दिनों देवासुर संग्राम जैसी स्थिति समाज में दिखाई देती है। समुद्र मंथन में पहले विष ही प्रकट हुआ था। वैसे ही इन दिनों राष्ट्रीय परिदृश्य में वैमनस्य बढ़ता दिखाई दे रहा है। इन दिनों आवश्यकता है युग निर्माण के सर्वमान्य सूत्र (18 सूत्रीय युग निर्माण सत्संकल्प) के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित करने की, जो नवयुग की संरचना का आधार बनने जा रहे हैं। हमारे सार्वजनिक कार्यक्रमों में दीप प्रज्वलन के बाद या किसी अन्य उपयुक्त समय में इन्हें दोहराने की परम्परा विकसित की जा सकती है।

विद्यालयों में : नवोदित पीढ़ी में इन सत्संकल्पों के प्रति आस्था जगाने की प्रबल आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से हमारा संपर्क देश के हजारों विद्यालयों से है। उनमें यदि प्रार्थना में या सप्ताह में एक बार इन्हें दोहरवाने का क्रम बना सकें तो भटकती युवा पीढ़ी को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जा सकता है।

सद्वाक्य स्थापना अभियान

परम पूज्य गुरुदेव ने दीवार लेखन अभियान पर विशेष बल दिया है। इन दिनों विनाइल पर प्रिण्टेड और सनबोर्ड पर पेस्टेड सद्वाक्यों को विद्यालयों, विभिन्न कार्यालयों, रेलवे स्टेशन, पोस्ट ऑफिस, अस्पताल, पुलिस स्टेशन आदि में ऐसे सद्वाक्य लगाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2022 में ही शान्तिकुञ्ज द्वारा पूरे देश में लगभग 22 लाख रुपयों के सद्वाक्य भेजे गए हैं। विचार क्रान्ति के इस प्रगतिशील अभियान की ओर भी हमें ध्यान देना चाहिए।

वसंत पर्व की पावन वेला में अपनी सक्रियता को अधिकाधिक प्रभावशाली बनाने की अनेक योजनाएँ हो सकती हैं। पाठकों ने यदि कोई प्रभावशाली योजना अपना रखी हो तो उसे भी हमारे साथ साझा करें। इन योजनाओं के सम्बन्ध में कोई जिज्ञासा हो तो मोबाइल 9258369413 पर सम्पर्क किया जा सकता है। ***

युग परिवर्तन में छत्तीसगढ़ की बहिनों की अग्रणी भूमिका होगी। - श्रद्धेया जीजी

नारी सशक्तीकरण चेतना शिविर, जैनम मानस भवन, रायपुर, छत्तीसगढ़ (27 से 29 दिसम्बर 2022)

छत्तीसगढ़ में प्रान्तीय नारी संगठन ने नारी जागरण की दिशा में एक क्रान्तिकारी पहल की है। जिस देश की नारी जाग गई हो, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। यह अभियान अब देश के प्रत्येक जिले एवं गाँव-गाँव में फैलेगा। युग परिवर्तन में छत्तीसगढ़ की बहिनों की अग्रणी भूमिका होगी।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की सूत्र संचालक श्रद्धेया शैल जीजी ने रायपुर के 'नारी सशक्तीकरण चेतना शिविर' में भाग ले रही लगभग 5500 बहिनों को सम्बोधित करते हुए उपरोक्त संदेश दिया। उनका संदेश नारी उत्कर्ष के लिए निरंतर प्रयत्नशील कार्यकर्त्ताओं में नए उत्साह का संचार करने वाला था।

श्रद्धेया जीजी ने नारी सशक्तीकरण वर्ष में छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक टोलियों के गठन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की और इस अभियान को जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक जारी रखने का आह्वान किया।

किसी भी राज्य के विकास के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है, एक प्रचुर साधन और दूसरा चरित्रवान लोग। छत्तीसगढ़ में यह दोनों ही देखने को मिलते हैं। यह प्रदेश निश्चित ही युग परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

रायपुर के मंच पर श्रद्धेया जीजी, आद. शेफाली जीजी, आद. डॉ. चिन्मय जी एवं शान्तिकुञ्ज की टोली

भव्य एवं दिव्य था दीपयज्ञ -

श्रद्धेया शैल जीजी एवं आदरणीया शेफाली जीजी के सान्निध्य में हजारों दीपकों से सुसज्जित मानस भवन के प्रांगण में संकल्प दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रद्धेया जीजी ने अपने दिव्य संदेश में छत्तीसगढ़ की नारी शक्ति को रचनात्मक अभियानों में निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा दी। आदरणीया शेफाली जीजी ने नारी सशक्तीकरण अभियान को गाँव-गाँव तक पहुँचाने हेतु समयदान का आह्वान किया।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों के मार्मिक उद्गार

स्वर्ग की सृष्टि कर सकती है नारी। - श्रद्धेया जीजी

"इस संसार में एक विशेषता केवल नारी के पास है, वह है मातृत्व की शक्ति। इस मातृत्व के सहारे नारी धरती पर स्वर्ग का सृजन कर सकती है। अपनी मातृ संवेदनाओं के सहारे नारी परिवार और समाज को सद्गुणी, संस्कारवान बना सकती है। नारी में युग को बदलने की सामर्थ्य विद्यमान है।

प. वं. माताजी नारी जागरण का आदर्श हैं। - आदरणीया शेफाली जीजी

"परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा हमारे नारी जागरण अभियान का आदर्श हैं। उनके व्यक्तित्व में सहज करुणा, ममता, सेवा, साधना का अनुपम संगम था। स्वयं परम पूज्य गुरुदेव कहते रहे हैं कि माताजी की सघन आत्मीयता व स्नेह के बिना इस विराट देव परिवार की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। उन्हीं आदर्शों को अपनाकर छत्तीसगढ़ की बहिनें विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों में जिस निष्ठा के साथ सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं, वह अभिनन्दनीय है, अनुकरणीय है।

नारी अपने चरित्र, चेतना व संकल्प से किसी भी मनुष्य को बदल सकती है। - आद. डॉ. चिन्मय जी

"जितनी देवियाँ छत्तीसगढ़ में हैं, उतनी तो स्वर्ग में भी नहीं होंगी। आप सबके सकारात्मक दिशा में कार्य करने से यह धरती स्वर्ग बन जायेगी और पूज्यवर की उद्घोषणा 'मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण' सही सिद्ध हो जायेगी।

किसी व्यक्ति को बदलने की शक्ति नारियों में ही है। एक नारी अपने चरित्र, चेतना एवं संकल्प से किसी भी मनुष्य को बदल सकती है। आज व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए ही जी रहा है, उसे परमार्थपरायणता और लोकमंगल के लिए जीने का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता है।

बेटे-बेटी में भेदभाव और नारी प्रताड़ना छोड़ें बहिनें।

-श्रीमती किरणमयी नायक (छत्तीसगढ़ महिला आयोग की अध्यक्ष)

प्रान्तीय नारी सशक्तीकरण चेतना शिविर का शुभारम्भ दिनांक 28 दिसम्बर 2022 को आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी द्वारा धर्म ध्वजारोहण एवं 24 बहिनों द्वारा शंखनाद से हुआ। कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्रीमती श्यामा राठौर की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली पहुँची थी।

उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि श्रीमती किरणमयी नायक, छत्तीसगढ़ महिला आयोग की अध्यक्ष ने नारी सशक्तीकरण के व्यावहारिक पक्ष की चर्चा करते हुए कहा कि यह एक विडंबना है कि बेटे और बेटी में भेद और घरेलु हिंसा की घटनाओं में महिलाएँ ही अधिक दोषी पाई जाती हैं। बहिनें यदि बेटे और बेटी में भेदभाव छोड़ने तथा किसी महिला को प्रताड़ित न करने का संकल्प लें तो नारी सशक्तीकरण का बहुत बड़ा प्रयोजन पूरा हो सकता है। तभी पूज्य गुरुदेव का कथन ''हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा'' सार्थक सिद्ध होगा।

तीन दिनों तक प्रेरणाप्रद प्रज्ञागीतों और विशिष्ट वक्ताओं का क्रम रहा। श्रीमती श्यामा राठौर ने 'शतसूत्रीय आंदोलन का मूलाधार नारी' विषय से संदेश देते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव सभी आंदोलन के मूल में 'नारी जागरण अभियान' को देखते थे। उनका मानना था कि सुसंस्कृत नारी ही परिवार निर्माण कर सकती है और परिवार निर्माण से समाज एवं राष्ट्र का उत्थान सुनिश्चित है।

छत्तीसगढ़ में नारी जागरण अभियान प्रभारी **डॉ. श्रीमती कुंती साहू** ने 'मातृसत्ता विजन-2026' का विवरण प्रस्तुत करते हुए आगामी चार वर्षों की सक्रियता से सभा को अवगत कराया। गाँव-गाँव में नारी जागरण, उनके प्रशिक्षण, मंडल गठन और रचनात्मक कार्यों में नियोजन की योजना उन्होंने समझाई।

श्रीमती आदर्श वर्मा, प्रान्तीय समन्वयक, छत्तीसगढ़ ने 'नारी सशक्तीकरण में छत्तीसगढ़ अग्रणी भूमिका निभाए' विषय पर अपनी बात कहते हुए कहा कि हमें शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में अन्य प्रान्तों में भी नारी सशक्तीकरण आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

श्रीमती रूपाली गाँधी ने 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को गति देने और आँगनबाड़ी व मितानीनों के सहयोग से बड़े स्तर पर पुंसवन संस्कार कार्यक्रम आयोजित करने हेतु प्रेरित किया।

श्रीमती सरस्वती तिवारी ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस सम्मेलन से विगत तीन वर्षों से प्रदेश में चल रहे नारी जागरण अभियान को दिशा एवं गति मिलेगी।

सुश्री मीना ध्रुव ने प्रान्तीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

रायपुर में श्रद्धेया जीजी का भावभरा स्वागत

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक की सक्रियता के कुछ संकल्प

प्रतिदिन मध्याह्न काल में उपजोन एवं जिलावार समूह चर्चाएँ हुईं। इनमें आगामी तीन वर्षों की सक्रियता की दिशाधारा निर्धारित करते हुए बड़े ही उत्साहवर्धक संकल्प उभरे, कुछ यहाँ प्रस्तुत हैं-

पुंसवन संस्कार	134792
बाल संस्कार शाला	8229
किशोर संस्कार शाला	2806
कन्या कौशल शिविर	3680
आवासीय कन्या कौ. शिविर	1993
नारी सशक्तीकरण कार्यशाला	11608
कर्मकाण्ड प्रशिक्षण	7865
बा.सं.शा.आचार्य प्रशिक्षण	3638
स्वावलंबन प्रशिक्षण	2009
कन्या कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण	2009
अखण्ड ज्योति पत्रिका	132078
रचनात्मक दीपयज्ञ	69982
स्वाध्याय मंडल संचालिन	16708

241 बहिनों की सक्रियता का सम्मान

प्रान्तीय युवा समन्वयक श्री ओमप्रकाश राठौर ने बताया कि छत्तीसगढ में विगत तीन वर्षों में नारी जागरण और सशक्तीकरण के लिए बहुत बड़ा कार्य हुआ है। प्रस्तुत शिविर में विविध कार्यों में विशिष्ट उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने वाली 241 बहिनों को सम्मानित किया गया। आदरणीया शेफाली जीजी ने उन्हें स्मृति चिह्न एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

स्मारिका 'नारी अभ्युदय'

शिविर की पावन स्मृति में एक स्मारिका भी प्रकाशित की गई है, जिसका विमोचन आद. शेफाली जीजी सहित मंचासीन गणमान्य बहिनों ने किया।

आद. शेफाली जीजी 'नारी अभ्युदय' स्मारिका का विमोचन करते हुए

चिड़िया से सीखें समर्पण-सशक्तीकरण

रायपुर के सम्मेलन में श्रद्धेया जीजी ने नारी की गौरव गरिमा को एक सरल से दृष्टांत के साथ समझाते हुए कहा कि नारी की भूमिका एक चिड़िया जैसी होनी चाहिए। चिड़िया अंडे देने से पहले घोंसला बनाती है, अण्डे देने के बाद उन्हें सेती, चूजे निकलने पर उनके लिए खाना लाती है, उन्हें घोंसले में ही पंख पसारना सिखाती है और समर्थ बनाकर स्वयं ही उन्हें उड़ा देती है।

नारी सशक्तीकरण शिविर के विशिष्ट आकर्षण

भव्य स्वागत : श्रद्धेया शैल जीजी का बहुत लम्बे समय के बाद छत्तीसगढ़ की भूमि पर आगमन हुआ। हवाईअड्डे एवं मानस भवन में उनका तथा आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। लगभग 400 मीटर तक मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध होकर परिजन उन पर पुष्पवर्षा करते, झाँझ बजाते, शंखनाद करते व जयकारे लगाते रहे।

प्रज्वलित मशाल : दीपयज्ञ के समय मंच के दोनों ओर 24 कन्याओं के हाथों में विचार क्रांति की प्रतीक प्रज्वलित मशाल मन में उल्लास जगाती रहीं।

रंगोली : एक कलाकार के द्वारा मंच के ठीक सामने सैण्ड आर्ट के माध्यम से किया गया श्रद्धेया जीजी का हूबहू चित्रण सभी को आकर्षित करता रहा। जैनम मानस भवन के प्रांगण में भारत माता, छत्तीसगढ़ महतारी, सप्तसूत्रीय आंदोलन एवं आदर्शग्राम जैसे विषयों को रंगोली के माध्यम से उकेरा गया था।

गुरुस्मारक : जशपुर जिले के कांसाबेल के कार्यकर्त्ता श्री रामकुमार थवाईत एवं धमतरी जिले के डॉ.गोपाल साहू द्वारा निर्मित प्रखर प्रज्ञा एवं सजल श्रद्धा की कलाकृतियों ने सबका मन मोह लिया।

सांस्कृतिक संध्या : दिनांक 27 दिसम्बर की सायं सभी जिलों की प्रतिभागी बहिनों द्वारा एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। स्वच्छता, दहेज, हृदय परिवर्तन सम्बन्धी नाटक अत्यंत प्रेरणादायी थे। माताजी गुरूदेव की झाँकी भी प्रस्तुत की गई। प्रज्ञागीतों पर भावनृत्य तथा पारंपरिक गीत मनमोहक थे।

जिनके हृदय में साहस और संवेदना होती है, वही सही मायनों में युवा है। - डॉ. चिन्मय जी

सिलीगुड़ी में सम्पन्न हुआ पूर्व एवं पूर्वोत्तर भारत के युवाओं का विशाल सम्मेलन 'युग सृजेता समारोह'

युग सृजेता शिविर के मंच पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, उनके दायें शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे, बाँयें श्री विनय केसरी

सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग। पश्चिम बंगाल

सिलीगुड़ी में 15 से 18 दिसम्बर 2022 की तिथियों में पूर्व एवं पूर्वोत्तर भारत के राज्यों का युग सृजेता समारोह का आयोजन किया गया। श्री पंचमुखी बालाजी मंदिर, सिलिगुड़ी के परिसर में आयोजित यह शिविर ऐतिहासिक था, जिसमें पश्चिम बंगाल, बिहार, सिक्किम, असम, अरुणाचल आदि से आए लगभग 1600 युवा शामिल हुए। शिविर में उन्हें व्यक्ति, समाज व राष्ट्र निर्माण का पाठ पढ़ाया गया।

16 दिसम्बर की सुबह ध्यान साधना के बाद आयोजन स्थल पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच धर्म ध्वजारोहण से कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ हुआ। युवा प्रकोष्ठ समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री केदार प्रसाद दुबे जी और स्थानीय समाज सेवी श्री कैलाश जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर पूरा आयोजन स्थल वंदे मातरम व भारत माता के जयकारों से गूँज उठा।

प्रथम सत्र का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन-देवपूजन के साथ हुआ। केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे ने अपने प्रथम उद्बोधन में कहा कि दुनिया के सभी देशों में भारत की पहचान सबसे अलग है। देश शिक्षा, खेल, स्वास्थ्य, नारी सशक्तीकरण, पर्यावरण संरक्षण सहित सभी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी हमें महारत हासिल है। लेकिन नशाखोरी, भ्रष्टाचार, अनास्था, भौतिकवाद और तरह-तरह की अनेक कुरीतियों ने हमारी प्रगति को कुंठित कर गरीबी, बेरोजगारी, भेदभाव जैसी अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। इनसे समाज को मुक्ति दिलाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा।

वर्ष-2023 की सक्रियता के संकल्प

385 युवा अग्रदूत तैयार करने,
209 प्रवासी युवा समयदानी तैयार करने,
125 एक दिवसीय एवं
30 तीन दिवसीय युवा शिविरों का आयोजन
10,507 घरों में यज्ञ करने,
16,030 वृक्ष लगाने,
3000 पत्रिकाओं के सदस्य बनाना आदि ...

17 दिसंबर श्री आशीष सिंह ने दिव्यता जागरण कार्यशाला के साथ ही जीवन को सुखमय बनाने के लिए सेवा, समय प्रबन्धन, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण सहित अनेक अभियान चलाकर विचार क्रान्ति अभियान को गति देने के सूत्र समझाये।

पूर्वोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री विनय केसरी ने अपने उद्बोधन में नवयुग के निर्माण की सुनिश्चित संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

दीपयज्ञ : 17 दिसंबर की सायंकाल सम्पन्न विराट दीप महायज्ञ ऐतिहासिक और अविस्मरणीय था। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी महाकाल का संदेश सुनाने शिविर के प्रतिभागियों के बीच उपस्थित हुए। जनसभा को 'हिमालय पुकार रहा है' शीर्षक से सम्बोधित करते हुए युवाओं को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने के सनातन सिद्ध सूत्र बताये।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बताया कि किसी भी देश की उन्नति में उस देश के युवाओं की भूमिका बड़ी अहम होती है। जिनके हृदय में साहस और संवेदना होती है, वही सही मायनों में युवा है। संस्कारवान और चरित्रवान युवा ही परिवार और समाज में खुशहाली का कारण बनते हैं।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गायत्री मंत्र की महत्ता समझाते हुए कहा कि आज प्राचीन काल की तरह के असुर दिखाई नहीं देते लेकिन व्यक्ति के मन और समाज में असुरता संकीर्णता, स्वार्थपरता, संवेदनहीनता, असंतोष, लालच, अहंकार जैसी वृत्तियों के रूप में बुरी तरह हावी है। इन्हें मिटाने के लिए गायत्री की उपासना नितांत अनिवार्य हो गई है।

गायत्री मंत्र सद्बुद्धि का विकास करने वाला और अंतःकरण में बुराइयों से लड़ने का साहस पैदा करने वाला मंत्र है। गायत्री आज युगशक्ति बन गई है। इसका प्रभाव पूरे विश्व में बढ़ रहा है। यूरोप के तीन देशों में गायत्री मंत्र से संसद की शुरूआत होती है। हम सबको भी स्वयं नियमित रूप से गायत्री उपासना करनी चाहिए और जन-जन तक इसे पहुँचाना चाहिए।

समापन समारोह

समापन समारोह के मुख्य अतिथि सिलीगुड़ी के पुलिस कमिश्नर श्री अखिलेश चतुर्वेदी थे। उनकी उपस्थिति में सैकड़ों युवाओं ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। अगले वर्ष गुवाहाटी में होने वाले युग सृजेता समारोह की मशाल कार्यकर्त्ताओं को सौंपी गई। समारोह में सिलीगुड़ी के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

अंतिम दिवस के विदाई सत्र में प्रतिभागियों को युग सृजेता बनकर कार्य करने के संकल्प दिलाए गए। कार्यक्रम में सर्वश्री विजय अग्रवाल, श्री राजेश शर्मा, श्री एस.एन. सिंह, श्री अरुणांशु शर्मा, श्री अशोक मित्तल की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

युग सृजेता समारोह, सिलीगुड़ी की विशिष्ट झलकियाँ

शोभायात्रा

कार्यक्रम के पूर्व दिवस पर दिनांक 15 दिसम्बर को गायत्री शक्तिपीठ सिलीगुड़ी से जनजागरण शोभायात्रा निकाली गई, जिसको शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री विनय केशरी एवं श्री आशीष सिंह जी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सिलीगुड़ी शहर में समग्र भारत की छवि दिखाई देती है। यहाँ हर तरह की भाषा बोलने वाले व सभी धर्म के लोग रहते हैं। यह शहर चार(नेपाल, भूटान, बांग्लादेश एवं चीन की) अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से घिरा है। युग सृजेता समारोह में प्रथम दिन सायंकाल प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम इन विविधताओं में भारत की समृद्ध संस्कृति का दिग्दर्शन करता दिखाई दिया। विभिन्न प्रांतों की कला, नृत्य व बच्चों द्वारा की गई प्रस्तुति को देखकर सभी शिविरार्थियों ने काफी प्रशंसा की।

दूसरे दिन की सायंकालीन सांस्कृतिक संध्या में कोलकाता जीपीवाईजी टीम द्वारा पर्यावरण पर एक नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसे सभी ने बहुत पसंद किया।

दिन के सत्रों में व्यसन मुक्ति कार्यक्रम को संपूर्ण पूर्वोत्तर भारत में कैसे तेजी से फैलाया जाए, इस पर विचार मंथन हुआ।

प्रदर्शनी के माध्यम से मिशन के समस्त रचनात्मक कार्यक्रमों की झलक झाँकी दिखाई गई थी।

जीपीवायजी कोलकाता द्वारा वृक्षारोपण

युवा युग सृजेता शिविर सिलीगुड़ी में ही गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने अपने सतत रविवारीय वृक्षारोपण कार्यक्रम का 633वाँ कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस विशिष्ट अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, अभियान संयोजक श्री रवि शर्मा ने वृक्षारोपण किया।

खपरैल में चेतना केन्द्र के भवन के लिए भूमिपूजन

युवा युग सृजेता, सिलीगुड़ी कार्यक्रम के बीच ही आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का प्रवास दार्जिलिंग जिले के ही खपरैल में हुआ। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने गायत्री परिवार रचनात्मक चेतना केन्द्र में प्रस्तावित भवन निर्माण के लिए भूमि पूजन किया। डॉ. चिन्मय जी ने महाकाल मंदिर एवं गुरु प्रतीकों के पूजन के पश्चात स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए केन्द्र को विकसित करने के लिए विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रगतिशील विचारों के आधार पर ही भारत विश्व का नेतृत्व करेगा

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी किशनगंज के महायज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए

किशनगंज। बिहार

युवा युगसृजेता सिलीगुड़ी से विदाई के पश्चात् 18 नवम्बर को किशनगंज में चल रहे 108 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ में दीपयज्ञ के अवसर पर पहुँचे थे। उपस्थित हजारों श्रोताओं का उत्साहवर्धन करते हुए वहाँ उन्होंने कहा कि इन दिनों सांस्कृतिक परिवर्तन की नई गाथा लिखी जा रही है। इसमें भारत का स्वाभिमान, संस्कृति आदि को नए सिरे से लिखा जाना है। इस परिवर्तन में युवाओं की भूमिका बताते हुए उन्होंने कहा कि युवाओं की एक हलचल ने पूरे देश में बड़े परिवर्तन किए हैं। अब समय विचारों में परिवर्तन का है। विचारों के परिवर्तन से और युवाशक्ति के सुनियोजन से ही भारत विश्वगुरु बनेगा। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने श्रोताओं को गायत्री उपासना के माध्यम से अंतःकरण को प्रकाशित करने का संदेश दिया। ट्रस्टी सर्वश्री मिक्की साहा, सुदामा राय, परमानन्द यादव, प्रियंका आर्य, सौरभ कुमार आदि सभी प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का हार्दिक स्वागत किया।

किशनगंज पहुँचने पर डॉ. चिन्मय जी ने सर्वप्रथम तेघरिया स्थित गायत्री शक्तिपीठ पहुँचकर दर्शन-पूजन किया। वे भागलपुर के सांसद श्री अजीत शर्मा जी से मुलाकात कर उन्हें पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना के अवतरण का साक्षी बनाना सौभाग्य की बात

बरबीघा, शेखपुरा। बिहार

दिनांक 19 दिसम्बर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बरबीघा पहुँचकर गायत्री शक्तिपीठ में नवनिर्मित गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की प्राण प्रतिष्ठा की। इस अवसर पर शेखपुरा जिले के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज का यह दिन हम सब के लिए निश्चित रूप से सौभाग्य का प्रतीक है, जब हम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना के अवतरण के साक्षी बन रहे हैं। हमें अपने युग निर्माणी संकल्पों को पूरा करने के लिए एकलव्य बनना होगा। स्वयं पर भरोसा हो और लक्ष्य के प्रति सच्ची श्रद्धा-निष्ठा हो तो असंभव लक्ष्य भी पूरे हो जाते हैं। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के साहित्य को घर-घर, गली-गली तक पहुँचा देने के लिए सार्थक प्रयास करने का आग्रह किया। इस अवसर पर डॉ. सी.बी. शर्मा, प्रणव प्रसून, दीपेश कुमार, राकेश कश्यप आदि गणमान्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

इससे पूर्व दिनांक 19 दिसंबर 2022 को ही आदरणीय डॉ. चिन्मय जी सर्वप्रथम गायत्री शक्तिपीठ बेगूसराय पहुँचे, माँ गायत्री का पूजन कर सबके लिए सद्बुद्धि और सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की।

बरबीघा में ऋषियुग्म के स्मारकों की प्राण प्रतिष्ठा और सभा को सम्बोधन

राष्ट्रकवि 'दिनकर' को श्रद्धाञ्जलि

सिमरिया : तत्पश्चात् डॉ. चिन्मय जी ने हिंदी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' को उनकी जन्मभूमि बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में पहुँचकर श्रद्धांजलि दी।

दिनकर जी के परिवार में देवस्थापना कराते हुए

अपनी सामर्थ्य पर विश्वास रखिये। भगवान से प्रार्थना कीजिए, याचना नहीं।

केरल राज्य में पहली बार संपन्न हुई भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

इस वर्ष केरल में गायत्री परिवार के प्रान्तीय संगठन के प्रबल प्रयासों से पहली बार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन हुआ। 20 दिसंबर 2022 के दिन आयोजित इस परीक्षा में 23 विद्यालयों के लगभग 1700 बच्चों ने भाग लिया।

समग्र कार्यक्रम प्रदेश के प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा एवं श्रीमती प्रशान्ति शर्मा के नेतृत्व में चले। श्री उमेश जी ने बताया कि विद्यालय प्रबंधन को नैतिकता सम्पन्न, स्वाबलंबी, समाज व संस्कृति के प्रति निष्ठावान पीढ़ी के निर्माण में गायत्री परिवार का सहयोग करते हुए अधिक से अधिक बच्चों को परीक्षा में शामिल करने का अनुरोध किया गया। उन्हें बताया गया कि देश के सर्वाधिक साक्षर राज्य के लोगों की मानसिकता में छाई नकारात्मकता को विधेयात्मक चिन्तन में बदलने की भी प्रयास इस परीक्षा द्वारा किए जा रहे हैं।

समग्र योजना में कोचीन के श्री अशोक अग्रवाल जी, श्री एस.एन. सिंह, केन्द्रीय विद्यालय की सह शिक्षा अधीक्षिका श्रीमती दीप्ती नायर, कालीकट के श्री एम.टी. विश्वनाथन, श्री ज्योतिष प्रभाकरन का सराहनीय योगदान रहा है।

केरल राज्य के एक विद्यालय में परीक्षा देते विद्यार्थीगण

केरल में यहाँ हुई भासंज्ञाप.

तिरुवनंतपुरम-पेट्टोम, आकुलम, पेंगोडे कोल्लम, रामन कुलंगरा पथनमथिता-आडूर, माथूर, कोनी कोट्टायम, कडुथूर्थी कोचीन, कडवंतरा, फोर्ट ट्रस्ट कोच्चि, नेवल बेस कटारी बाग 1 एवं 2, INS द्रोणाचार्य इडुक्की, पैनावू त्रिशूर, रामावरमपुरम, पेरंथुकरा पालघाट, कंजीकोड, ओट्टापालम कालीकट, गोविंदपुरम, ईस्ट हिल एवं वेस्ट हिल कन्नूर, डिस्टिक हॉस्पिटल, CRPF पेरिंगोमे, केल्ट्रॉन नगर, कासरगोड- विद्यानगर, नीलेश्वर आदि।

अखिल भारतीय वेद महोत्सव में युगऋषि के साहित्य की प्रदर्शनी

इन्दौर। मध्य प्रदेश

माँ अहिल्या की पावन नगरी इंदौर के वैष्णव स्टेडियम, राजमोहल्ला में 16 से 18 दिसम्बर की तिथियों में अखिल भारतीय वेद महोत्सव का आयोजन हुआ। इस तीन दिवसीय आयोजन में गायत्री परिवार इंदौर द्वारा वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित साहित्य का स्टाल लगाया गया। इसमें पूज्य गुरुदेव द्वारा भाष्य किए गए वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि को प्रमुखता से शामिल किया गया था, जिसे प्रबुद्ध जनमानस ने बहुत पसंद किया। मात्र दो दिनों में लगभग 65 हजार का साहित्य लोगों ने खरीदा। कार्यकर्त्ता भी इस सफलता से बहुत उत्साहित हुए। मुख्य रूप से श्री नवल सिंह पंवार, श्रीओ.पी. जाधव व श्री गोपीकिशन खोदरे का योगदान रहा। अन्य परिजनों ने भी भविष्य में ऐसे आयोजनों के लिए समयदान का संकल्प लिया।

अखिल भारतीय वेद महोत्सव का आयोजन इंदौर के सांसद श्री शंकर ललवानी एवं नगर के प्रबुद्ध गणमान्यों द्वारा किया गया। इसमें पूरे देश के हजारों वेदपाठी संत, ब्राह्मण तथा वैदिक पीठ के बटुकों की उपस्थिति रही।

नारी सशक्तीकरण गायत्री महायज्ञों की अत्यंत सफल शृंखला

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में सम्पन्न हुए लगभग **15** कार्यक्रमों में 15000 से ज्यादा पुंसवन, नामकरण, विद्यारंभ एवं अन्य संस्कार संपन्न हुए। 2800 से अधिक लोगों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली।

इन दिनों पूरे देश में नारी सशक्तीकरण गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथाओं की शृंखला चल रही है। ये कार्यक्रम जनमानस पर अभीष्ट छाप छोड़ रहे हैं।

शान्तिकुञ्ज से टोली नायक श्री सूरत सिंह अमृते एवं उनके सहायक श्री गणेश चांदवंशी, एवं श्री तपेश्वर शांडिल्य, श्री प्रसाद दास की टोली ने उत्तर प्रदेश के सोनभद्र, मध्य प्रदेश के सागर, दमोह, छिंदवाड़ा और बैतूल जिलों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं श्रीमद् प्रज्ञा पुराण कथा के कार्यक्रम सम्पन्न कराए।

सोनभद्र रॉबर्ट्सगंज (उत्तर प्रदेश) के कार्यक्रम ने श्रद्धालुओं को बहुत प्रभावित किया। कार्यक्रम में पधारे नगर पालिका अध्यक्ष श्री विजय जैन सहित अनेक लोगों ने कहा कि पूज्य आचार्य जी के विचार जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

हाजी फरीद ने यज्ञ में भाग लिया और अपने आत्मा के भाव व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार सुनकर बहुत अच्छा लगा। यह अनुभव किया कि यज्ञ तो मानव मात्र के लिए होता है। उन्होंने अगले वर्ष में अपनी ओर से 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ कराने की घोषणा की।

यज्ञ पूर्णाहुति के अवसर पर पूर्णाहुति में बड़ी संख्या में बच्चों (भइयों-बहिनों) ने तंबाकू, गुटका, शराब और सिगरेट का सेवन नहीं करने का संकल्प लिया। उन्हें यह संकल्प लेते देखकर उनकी माताएँ बहुत प्रसन्न थीं।

चितरंगी, सिंगरौली (मध्य प्रदेश)

चितरंगी में सम्पन्न आयोजन नारी सशक्तीकरण की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण था। नारी सशक्तीकरण सम्मेलन में स्थानीय एस.डी.एम. श्रीमती संपदा सर्राफ उपस्थित रहीं। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार बहिनों को सद्गुणी, संस्कारवान बनाकर और उन्हें समाजसेवा में प्रवृत्त कर सही मायनों में नारी उत्कर्ष के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहा है। उन्होंने गायत्री परिवार के पर्यावरण संरक्षण, कुरीति उन्मूलन, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आदि कार्यक्रमों की विशेष रूप से सराहना की।

शृंखला के एक कार्यक्रम में प्रज्ञा पुराण कथा कहती शान्तिकुञ्ज की टोली

''यह यज्ञ मानवमात्र के कल्याण के लिए है।''
- हाजी फरीद, रॉबर्ट्सगंज, सोनभद्र (उ.प्र.)

''गायत्री परिवार बहिनों को सद्गुणी, संस्कारवान बनाकर नारी उत्कर्ष के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहा है।''
- श्रीमती संपदा सर्राफ, चितरंगी, सिंगरौली

24 गाँवों में सामूहिक साधना का संकल्प

चुरकी, सिंगरौली (मध्य प्रदेश) में आदिवासियों के बीच कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें स्थानीय 24 कन्याओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, जिन्होंने पूर्व तैयारियाँ कीं। उन्होंने मिलकर 24 गाँवों में मंडल बनाए। इन मण्डलों के माध्यम से जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक सामूहिक साधना का नियमित क्रम चलाने का संकल्प लिया है।

220 घरों में सद्ग्रंथ स्थापना

दमोह जिला के आदिवासी क्षेत्र के गाँव खेरे धाम में सम्पन्न कार्यक्रम में भी युग निर्माण आन्दोलन के प्रति शानदार आस्था दिखाई दी। गायत्री शक्तिपीठ दमोह के महिला मण्डल एवं एड. श्री पंकज श्रीवास्तव के प्रशंसनीय सहयोग से ही बिलकुल दुरूह क्षेत्र में यह कार्यक्रम सम्पन्न हो सका। वनवासियों का ऐसा शानदार उत्साह देखा गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने नशा छोड़ा, 220 घरों में सद्ग्रंथ स्थापना हुई और 22 गाँवों में मण्डलों का गठन हुआ।

छिंदवाड़ा जिले का नवेगाँव भी एक ऐसा आदिवासी क्षेत्र है, जहाँ सम्पन्न हुए कार्यक्रम में 29 गाँवों के लोगों ने भाग लिया। श्री अटल खुरवे एवं जीवन राकेशिया ने इन सभी गाँवों में युवा मण्डलों को चलाने का संकल्प लिया है।

समस्त पंचायतों में होगी सद्ग्रंथ स्थापना

51 यूनिट रक्तदान हुआ

बैतूल बाजार में स्थानीय सांसद श्री दुर्गा प्रसाद उइके जी ने अपनी समस्त पंचायतों में पावन सद्ग्रंथों की स्थापना कराने का संकल्प लिया है। कार्यक्रम स्थल पर रक्तदान शिविर आयोजित कर 51 यूनिट रक्तदान किया गया। नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती दुर्गावती वर्मा जी ने भी रक्तदान किया।

छिंदवाड़ा जिला की हर्रई तहसील में कार्यक्रम से प्रभावित होकर अध्यापक श्री मंगल डहेरिया ने गायत्री संस्थान के लिए जमीन दान की। शान्तिकुञ्ज की टोली द्वारा उसका भूमि पूजन किया।

छिंदवाड़ा जिले के मोहखेड़ ब्लॉक के चार गाँव में पहली बार गायत्री परिवार का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसके प्रभाव से 19 गाँवों में नए प्रज्ञा मण्डल बने। विधायक श्री चोरी जी एवं पूर्व विधायक श्री नानाभाऊ मोहढ़ जी सहित कार्यक्रम से प्रभावित अनेक गणमान्यों ने वर्ष-2026 तक गाँव-गाँव में ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से नारी सशक्तीकरण का अभियान चलाने का संकल्प लिया।

हर विद्यालय में बाल संस्कार शाला

गोंदिया (महाराष्ट्र) में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 17 समाज सेवी संस्था के प्रमुखों ने भाग लिया। लगभग 14 स्कूल-कॉलेजों का संचालन कर रहे शिक्षा संस्थान के प्रमुख श्री अजय इंगले ने अपने हर स्कूल में बाल संस्कार शाला चलाने की घोषणा की। 16 गाँवों में साप्ताहिक सामूहिक साधना का क्रम चलाने के संकल्प दिलाए गए।

300 लोगों द्वारा सद्ग्रंथ पूजन

साकोली महाराष्ट्र में संपन्न हुए कार्यक्रम में लगभग 300 भाई-बहिनों ने सद्ग्रंथ पूजन करवाया।

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ से पूरे नगर में छाया आध्यात्मिक उल्लास

सिवनी। मध्य प्रदेश

लगभग तीन-चार माह तक किए गए कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों के परिणाम स्वरूप शिव की नगरी सिवनी में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ जबरदस्त उत्साह और उल्लास के बीच सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री नमोनारायण पाण्डेय जी की टोली ने मनुष्य जीवन का सदुपयोग कैसे करें, उसे सार्थक कैसे बनाएँ आदि पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताए गए बहुमूल्य व्यावहारिक सूत्रों की चर्चा की।

1500 सौ से ज्यादा माता और बहनों सहित गाजे-बाजे और सप्त आन्दोलन की झाँकियों के साथ निकली प्रथम दिन की कलश यात्रा ने पूरे नगर को वासंती उल्लास में डुबो दिया। ऐसा लगा मानो शिव की नगरी नींद से जाग उठी हो। मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सुंदरलाल बघेल ने बताया कि यज्ञ स्थल पर युगऋषि के जीवन दर्शन और मिशन के सप्त आन्दोलनों पर प्रदर्शनी लगाई गई थी, जिसका उद्घाटन प्रथम दिन शान्तिकुञ्ज की टोली ने किया। श्री गगन देशमुख ने प्रतिदिन प्रातः योगाभ्यास कराया।

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

सतना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्ति पीठ सतना की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती कुसुम पांडे का दिनांक 15 दिसम्बर 2022 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया है। उन्होंने अपना पूरा जीवन मिशन के लिए समर्पित किया। इन दिनों उनके तीनों सुपुत्र अभियंता श्री मनोज कुमार पाण्डेय, संजय पाण्डेय व मनीष पाण्डेय सहित पूरा परिवार मिशन की सेवा में संलग्न है।

अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान के पाठक-प्रचारकों का सम्मान समारोह

राजिम, गरियाबन्द। छत्तीसगढ़

शक्तिपीठ राजिम में दिनांक 18 दिसम्बर को अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना तथा प्रज्ञा पाक्षिक के पाठकों का सम्मान समारोह रखा गया था। पाठकों की अभिव्यक्ति का सार यही रहा कि हमारे जीवन में कोई भी समस्या हो, उनका समाधान इन पत्रिकाओं के

पाठकों ने कहा -
''इन पत्रिकाओं में मिलता है हर समस्या का समाधान।''

किसी न किसी पन्ने पर अवश्य मिल जाता है। समारोह में राजिम तहसील के सभी पाठकों का श्रीफल, गायत्री मंत्र पट्टी, गायत्री प्रार्थना पुस्तक तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मान किया गया।

राजिम में सद्ज्ञान की गंगा को घर-घर पहुँचाने वाले कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

सुख एक मृगतृष्णा है जो उसके पीछे दौड़ने वाले के हाथ नहीं आता। कर्त्तव्य पथ पर डटे रहो तो संतोष के रूप में सच्चा सुख अनायास ही मिल जाता है।

पूरे देश में विविध कार्यक्रमों से जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है युगऋषि का संदेश

कन्या कौशल शिविर में शामिल हुईं 4000 कन्याएँ

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

गोलोक धाम खड़कोद में नारी सशक्तीकरण वर्ष के विशेष संदर्भ में विशाल कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें नगर एवं आसपास के अनेक गाँव-जिलों की लगभग 4000 कन्याओं ने भाग लिया। अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने इसे सम्बोधित करते हुए बालिकाओं को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने की मार्मिक प्रेरणाएँ दीं। उन्होंने नारी सशक्तीकरण को श्रेष्ठ भारत के निर्माण का बुनियादी कार्य बताया।

श्री मधुसूदन गीते ने कहा कि गायत्री उपासना जीवन को निरंतर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करती है। देश की वीरांगनाओं ने जिस ऊर्जा के साथ अपना जीवन धन्य बनाया और राष्ट्र को गौरवान्वित किया, वह गायत्री उपासना से प्राप्त होती है।

श्री बृजेश पटेल ने कहा कि एक संस्कारवान कन्या के पास वह प्रचण्ड सामर्थ्य होती है जो बेटी, बहिन, वधु, माता के रूप में सभ्य समाज का निर्माण करती है।

कुमारी पूर्णिमा ने कहा कि बेटियों को आत्म सम्मान और जीवन के सच्चे आनन्द

कुमारी पूर्णिमा शिविर में भाग ले रही कन्याओं का पथ प्रदर्शन करते हुए

> 'सादा जीवन, उच्च विचार' ही नारी का सच्चा शृंगार है।
> - **कुमारी पूर्णिमा**

की अपेक्षा हो तो फैशन और व्यसन की झूठी शान से बचकर सीता, सावित्री की तरह गायत्री उपसना से आंतरिक गुणों को निखारना चाहिए। 'सादा जीवन, उच्च विचार' ही नारी का सच्चा शृंगार है।

श्री पन्नालाल बिरला ने कहा कि गायत्री वह प्रकाश स्तंभ है, जिसके सान्निध्य में आसुरी शक्तियाँ, नकारात्मक भाव, दोष-दुर्गुण टिक ही नहीं सकते।

इस शिविर में योग, लाठी, तलवार, कराटे, देश भक्ति गीत, व्यसन, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि के उन्मूलन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता, मोबाइल के दुरुपयोग के दुष्परिणाम जैसे अनेक विषयों पर आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन कार्यक्रमों ने कन्याओं को जीवन की सही राह चुनने के लिए प्रेरित किया।

श्री सचिन पाटिल ने बताया कि शिविर समापन पर सभी कन्याओं को सत्साहित्य भेंट किया गया।

अश्वमेध महायज्ञ मुम्बई का एक वर्षीय प्रयाज

महाराष्ट्र में 108 स्थानों पर देवकन्याओं द्वारा साधना हर जिले में पंच कुण्डीय यज्ञों की शृंखला

मुम्बई। महाराष्ट्र

23 से 28 जनवरी 2024 की तिथियों में आयोजित होने जा रहे अश्वमेध महायज्ञ के एक वर्षीय प्रयाज का विधिवत शुभारंभ हो रहा है। इस एक वर्ष में पूरे महाराष्ट्र में शक्ति कलश भ्रमण के साथ जन-जन को महायज्ञ में भागीदारी का आमंत्रण दिया जाएगा। पूरे महाराष्ट्र में 108 स्थानों पर देवकन्याओं द्वारा साधना कराई जाएगी।

दिनांक 24 दिसम्बर 2022 को जलगाँव जिले के गायत्री शक्तिपीठ भुसावल में और 25 दिसम्बर को गायत्री शक्तिपीठ नागपुर में आयोजित कार्यकर्त्ता गोष्ठी में इस आशय की घोषणा की गई। ये गोष्ठियाँ दक्षिण पश्चिम जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. विश्व प्रकाश त्रिपाठी की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुईं। दोनों में महाराष्ट्र के हर ब्लॉक के प्रमुख कुल 400 से 500 कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। इनमें दोनों जोन के लिए 4-4 टोलियों का गठन किया गया है, जो हर जिले के प्रमुख स्थानों पर पाँच-पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञों की शृंखला आयोजित करेगी।

भागीदारी का आह्वान

अश्वमेध महायज्ञ के शक्तिकलश भ्रमण का शुभारंभ संत नगरी शेगाँव से होगा। इसके माध्यम से हर परिवार से गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में शामिल होने तथा 1 मुट्ठी चावल व 51 रुपये का अनुदान देने का आग्रह किया जाएगा।

सुदूर पूर्वोत्तर के दुर्गम राज्यों में सक्रिय हैं प्राणवान युगनिर्माणी अग्रदूत

प्रज्ञापुराण कथा से धर्म चेतना का जागरण

इम्फाल। मणिपुर

भारत के पूर्वोत्तर में म्यामार की सीमा से लगे क्षेत्रों में युग चेतना के विस्तार का स्वर्णिम सुयोग बना। गायत्री परिवार से बिलकुल अनभिज्ञ क्षेत्र कांगकोपी जिले के कालापहाड़ सन्तोलाबारी में एक संस्था है 'धर्मोदय वेद विज्ञान गुरुकुल'। यह गुरुकुल वैदिक संस्कृति के उत्थान के लिए विगत छः माह से आर्ष ग्रंथों का पारायण करा रहा है।

गुरुकुल के प्रधानाध्यापक श्री दीनानाथ सुबेड़ी जी ने बताया कि वहाँ पहले कई सौ साल पुरानी गायत्री माता की एक मूर्ति भी थी, जो भूंकप के कारण क्षतिग्रस्त हो गई। उन्होंने उसके अवशेष भी दिखाए। इसी मंदिर क्षेत्र में गायत्री मंत्र जप एवं सप्तशती पाठ भी किया गया।

प्रधानाध्यापक जी ने सनातन संस्कृति के अपने प्रयासों में गायत्री परिवार को भी शामिल किया। शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री संतोष महतो एवं सिलचर के श्री गिरधारी मिश्रा ने वहाँ पहुँचकर पाँच दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा आयोजन सम्पन्न कराया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये सनातन संस्कृति के युगानुकूल सूत्रों को अपनाने और जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान श्रोताओं से किया। इस कार्यक्रम में मणिपुर के अनेक जिलों के संस्कृतिनिष्ठ महानुभाव उपस्थित थे।

इससे पूर्व 25 से 30 नवम्बर की तिथियों में गुरुकुल के छात्र, शिक्षक, अभिभावक एवं समीपवर्ती परिजनों के लिए सामूहिक तर्पण संस्कार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम ने लोगों पर युगऋषि की प्रगतिशील संस्कार परम्परा की गहरी छाप छोड़ी।

प्रज्ञा पुराण कथा कहते श्री संतोष महतो

राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं अन्य गणमान्यों से चर्चा

9 दिसम्बर को धर्मोदय वेद विज्ञान गुरुकुल द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का समापन समारोह आयोजित हुआ। इससे पूर्व 3 दिसम्बर 2022 को राजधानी इम्फाल में श्रीश्री गोविंद जी मंदिर में 'गीता जयन्ती' का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राज्यपाल माननीय श्री ला गणेशन, मुख्यमंत्री श्री एन. बिरेन सिंह, राज्यसभा सांसद महाराजा सनजाओबा लेशेम्बा सहित अनेक गणमान्य पधारे, अध्यक्षता संस्कार भारती मणिपुर प्रान्त के श्री वेदेश्वर शर्मा ने की।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधियों को उपरोक्त गणमान्यों के अलावा उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं से सम्पर्क करने व उन्हें परम पूज्य गुरुदेव, अपने मिशन एवं शान्तिकुञ्ज की जानकारी देने का अवसर मिला। सभी को शान्तिकुञ्ज पधारने का आमंत्रण दिया गया।

पारिवारिक युवा सम्मेलन

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में एक शाम गुरुवर के नाम

मंच से प्रतिभाओं का सम्मान

300 परिवारों ने भाग लिया

ग्रेटर नोएडा, दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

ग्रेटर नोएडा स्थित शक्तिपीठ प्रज्ञा विस्तार केन्द्र पर 'दिया' ग्रेटर नोएडा द्वारा एक विशाल कार्यक्रम 'एक शाम गुरुवर के नाम' एवं पारिवारिक युवा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। 17 एवं 18 दिसम्बर को आयोजित यह कार्यक्रम युवाओं के उत्साह का प्रतीक था, जिसमें युवा युग निर्माणियों के साथ उनके परिवारीजनों ने भी भाग लिया। शान्तिकुञ्ज से आई हुई युगगायकों की टोली ने लोगों को गुरुसत्ता के प्रति श्रद्धा-भक्ति बढ़ाने के साथ-साथ नवयुग का निर्माण करने का उत्साह व संकल्प जगाया।

प्रथम दिन के कार्यक्रम का समापन दीपयज्ञ से हुआ, जिसका संचालन गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा जी ने किया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 परिवारों की भागीदारी रही।

18 दिसम्बर के पारिवारिक युवा सम्मेलन में लगभग 350 नए और पुराने परिवारों के युवा बच्चों की भागीदारी को एक शानदार सफलता मानी जा रही है। शान्तिकुञ्ज से आए शक्तिपीठ-संगठन प्रभारी श्री योगेन्द्र गिरि की मुख्य उपस्थिति में यह सम्मेलन हुआ। उनके वक्तव्य ने श्रोताओं को महाकाल के साथ साझेदारी के परम सौभाग्य का बोध कराया। श्री बालरूप शर्मा जी ने इसमें आदर्शों के प्रति युवाओं की आस्था बढ़ाने तथा परिवार निर्माण सम्बन्धी छोटे-छोटे सूत्रों की चर्चा की।

- 'दिया' ग्रेटर नोएडा के समन्वयक श्री नीटू राघव और पूरी टीम ने 2023 में एनसीआर के युवाओं में नवचेतना जगाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक भव्य कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया।
- 'दिया' ने योग का एक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए सभी को नियमित जीवन में योग को अनिवार्य रूप से शामिल करने की प्रेरणा दी।
- मिशन के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले चार बुजुर्ग कार्यकर्त्ताओं को शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने प्रशस्ति पत्र और एक-एक मैडल देकर सम्मानित किया।
- बाल संस्कारशाला द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं नशा मुक्ति अभियान पर लघु नाटिका ने दर्शकों को झकझोर दिया।

चेतना केन्द्र पर मनाया महिला योग शक्ति दिवस

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

विगत कई वर्षों से योग से स्वास्थ्य रक्षा के अभियान को प्रोत्साहित कर रहे युगशक्ति गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद ने 26 दिसम्बर 2022 को महिला योग शक्ति दिवस मनाया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय योग संस्थान की महिला इकाई ने चेतना केन्द्र की प्रमुख योग शिक्षिका श्रीमती शीला त्यागी के नेतृत्व में किया। उल्लेखनीय है कि यह टोली नगर के चार प्रतिष्ठित कॉलोनियों में दैनिक योग की कक्षाएँ चलाती हैं, जिसमें सैकड़ों संभ्रान्त महिलाएँ नियमित रूप से भाग ले रही हैं।

चेतना केन्द्र पर विशिष्ट गणमान्यों के संग शहर में योग की कक्षाएँ चला रही योग शिक्षिकाएँ

शिविर के मुख्य अतिथि वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.के. मेहरोत्रा थे। दैनंदिन जीवन में योग का महत्त्व समझाते हुए उन्होंने बताया कि सामान्य स्वास्थ्य रक्षा के साथ योग से कई गंभीर बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है। इस अवसर पर केन्द्र व्यवस्थापक श्री एल.के. त्यागी, श्री एस.एन. मिश्रा, डॉ. लवलेश चंद्र आदि गणमान्य उपस्थित थे।

गायत्री यज्ञ के साथ दी विद्यार्थियों को विदाई

धरमपुर, वलसाड़। गुजरात

गायत्री परिवार की वलसाड़ शाखा ने 24 दिसम्बर को धरमपुर तहसील की मालनपाडा एकलव्य कन्या शाला में पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। यह कार्यक्रम परीक्षा के पूर्व बच्चों का मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए किया गया था। कक्षा 6 से 10वीं तक की 650 कन्याओं ने इसमें भाग लिया। कक्षा 10 की छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ विद्यालय से विदाई दी गई। गायत्री परिवार के प्रतिनिधि श्री उर्मिल देसाई ने परीक्षा के डर से मुक्ति पाने के सूत्रों की चर्चा की। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य सहित 25 शिक्षक-शिक्षिकाएँ शामिल थे।

केरल में अनेक सामाजिक संगठन मिलकर कर रहे हैं युगशक्ति गायत्री का विस्तार

परम पूज्य गुरुदेव के धरती पर स्वर्ग के अवतरण के संकल्प को पूरा करने की दिशा में पूरे देश का सघन मंथन कर रहे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 23 एवं 24 दिसम्बर की तिथियों में केरल पहुँचे। एर्नाकुलम, त्रिचूर और कोझीकोड़ में उनके कार्यक्रम सुनिश्चित थे। इस क्रम में अखिल विश्व गायत्री परिवार की विचारधारा के प्रति आस्था रखने वाले दक्षिण और उत्तर भारतवासी लगभग 50 से अधिक संगठनों का बड़ा उत्साहवर्धक सहयोग और समर्थन मिला।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने तीनों स्थानों पर आयोजित सभाओं को सम्बोधित करते हुए वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवता के कल्याण हेतु जनमानस के परिवर्तन की आवश्यकता समझाई। उन्होंने कहा कि साधन-सुविधाएँ बढ़ाने मात्र से दुनिया को नहीं बदला जा सकता। लोगों के विचारों को बदलकर ही दुनिया की समस्याओं का समाधान संभव है।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि वे व्यक्ति नहीं, वह शक्ति हैं जो परमात्मा के अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के संकल्प को पूरा करने के लिए बार-बार अवतरित होती रही है। परम पूज्य गुरुदेव के विचार ही नवयुग की संरचना का आधार होंगे, जिन्हें जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

एर्नाकुलम में समाज के पुरोधाओं को संदेश

दिनांक 23 दिसंबर 2022 को कोच्ची पहुँचने पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का नैष्ठिक परिजनों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। सर्वप्रथम उन्होंने गायत्री चेतना केन्द्र-पन्नमपिल्ली नगर में पहुँचकर माँ गायत्री का पूजन-वंदन किया। तत्पश्चात् वे एर्नाकुलम में उदय नगर स्थित नॉर्थ इंडियन चेरिटेबल ट्रस्ट के शिवमंदिर प्रांगण में पहुँचे। वहाँ कोच्ची के विभिन्न समाजिक संगठन के प्रतिनिधियों एवं गायत्री परिजनों के मध्य 'श्रद्धा और विश्वास : आध्यात्मिक उत्कर्ष का आधार' विषय पर उद्बोधन रखा गया था।

समारोह में एर्नाकुलम के लगभग 50 से अधिक समाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आरम्भ में उनके पदाधिकारियों ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का अपनी-अपनी संस्कृति और परंपरा के अनुसार स्वागत-अभिनंदन किया। शान्तिकुञ्ज की ओर से सभी को साहित्य एवं गंगाजली भेंट किए गए।

कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. चिन्मय जी की प्रायः सभी से व्यक्तिगत भेंट-चर्चा भी हुई। डॉ. चिन्मय जी के विचारों से सभी सहमत दिखाई दिये। सभी ने युगचेतना के विस्तार में अपने भरपूर सहयोग के भाव व्यक्त किए। सभी को एक अलौकिक दिव्यता की अनुभूति हुई।

एर्नाकुलम में आदरणीय विभिन्न सामाजिक संगठन के प्रतिनिधियों को डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन। उनके दायें मुख्य अतिथि केरल रेड क्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन श्री रंजीत कार्थिकेयन और बाँये शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा

कार्यक्रम के आरम्भ में स्वागत भाषण श्री निरंजन लाल मित्तल ने दिया तथा जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा जी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। केरल रेड क्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन श्री रंजीत कार्थिकेयन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने गायत्री परिवार की सेवाओं के प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की केरल में गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ता सर्वश्री अशोक अग्रवाल, लजपतराय कचोलिया, ठाकुर दास चांडक, एम एन बाबू, निरंजन लाल मित्तल, मोतीलाल गोयल, मोहन सूद आदि के साथ अलग से चर्चा हुई। उन्होंने स्थानीय गतिविधियों की समीक्षा करते हुए भावी सक्रियता के लिए मार्गदर्शन भी दिया। तिरुवनंतपुरम, त्रिशूर, पालघाट आदि जनपदों से परिजन भैया जी के सम्मान हेतु पधारे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कोचीन गायत्री परिवार के समन्वयक श्री अशोक अग्रवाल की उत्कृष्ट सेवाओं का सम्मान मंत्र शॉल ओढ़ाकर किया।

जन्मशताब्दी के लिए मंत्रलेखन अभियान

केरल में अखण्ड दीपक एवं जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को लक्ष्य कर युगशक्ति के विस्तार अभियान को गति दिने के लिए गायत्री मंत्र लेखन अभियान साधना का शुभारम्भ किया जा रहा है। इसके माध्यम से सन् 2026 तक 14 जिलों वाले इस राज्य में 2400 नये परिवारों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

इस योजना के अन्तर्गत हिन्दी एवं मलयालम भाषा में चार पेज की 'मंत्र लेखन शीट' और इस मंत्र लेखन अभियान साधना की विस्तृत जानकारी का पत्रक तैयार किया गया है। योजना के अन्तर्गत हर जिले में, हर वर्ग में, आगामी तीन वर्षों में गायत्री मंत्र जप-यज्ञ, मंत्र लेखन, गायत्री चालीसा पाठ का अभियान चलाया जाएगा। सभी कार्यकार्त्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र के 24-24 घरों में गायत्री मंत्र लेखन कराने का संकल्प लिया।

गायत्री परिवार के कार्यक्रम में प्रतिभागी संगठन

ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन, नॉर्थ इंडियन चैरिटेबल ट्रस्ट केरला, नॉर्थ इंडियन एसोसिएशन, नॉर्थ इंडियन एसोसिएशन महिला मंडल, मारवाड़ी महिला मंडल कोचीन, अग्रवाल समाज कोचीन, अग्रवाल समाज केरल, अग्रवाल युवा मंडल, माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी युवा संगठन, माहेश्वरी महिला मंडल, गुजराती समाज एर्नाकुलम, गुजराती महाजन समाज कोचीन, श्री श्याम प्रेम मंडल, जनकल्याण सोसायटी, जैन समाज, गुरुद्वारा सिंह सभा, गुजराती गायत्री महिला मंडल कोचीन, गायत्री महिला मंडल एर्नाकुलम, शंकराचार्य प्रज्ञा मंडल, परशुराम समाज, आध्यात्मिक ग्रुप, रामदेव युवा मंडल, रामदेव ट्रस्ट एर्नाकुलम, राजपुरोहित सेवा संघ, पालीवाल समाज, राजपूत समाज, सुथार समाज, आंजना पटेल समाज, गुर्जर समाज, जाट समाज, प्रजापति समाज, देवासी समाज, विश्वकर्मा कल्चरल एसोसिएशन, बंगाली समाज, सनातन सेवा संस्थान, उड़िया एसोसिएशन, तमिल ब्राह्मण समाज एर्नाकुलम, गौड़ सारस्वत ब्राह्मण विकास परिषद, आंध्र कल्चरल एसोसिएशन कोचीन, कन्नड़ संगम, शिवा टेंपल समिति, फ्रंड ट्रैवल सोसाइटी, सेवा भारती आदि।

दक्षिण भारतीयों में यज्ञीय आस्था का अभिसिंचन

कोझीकोड़ (कालीकट) में चल रहे 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में भाग लेने 24 दिसम्बर को पहुँचे। यहाँ भी लगभग 40 सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग यज्ञ में भाग ले रहे थे। ये मलयाली, तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी, कोंकणी, उत्तर भारतीय आदि हर क्षेत्र के सामाजिक संगठन थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन चिन्मय विद्यालय थोंडयाडू जंक्शन, कालीकट के गायत्री महिला मण्डल की मलयालम भाषी बहिनों की टोली कर रही थी।

कोझीकोड़ में गायत्री परिवार के सर्वहितकारी विचारों और कार्यों के प्रति लोगों की आस्था निरन्तर बढ़ रही है। श्रेष्ठाचार सभा के आचार्य श्री एमटी विश्वनाथन जी की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उनके साथ सभी संगठनों ने डॉ. चिन्मय जी के कोझीकोड़ आगमन पर गौरव की अनुभूति की। यज्ञमंच पर केन्द्रीय प्रतिनिधि का सम्मान समारोह आयोजित किया।

सम्मान समारोह के आरम्भ में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा ने आदरणीय डॉ. चिन्मय जी को विविध सामाजिक संगठनों का संक्षिप्त परिचय दिया। अंत में श्री एम.टी. विश्वनाथन जी ने काष्ठ प्रतिमा भेंट कर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को सम्मानित किया।

यज्ञ के अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने 'श्रद्धा और विश्वास : आध्यात्मिक उत्कर्ष का आधार' विषय से संबोधित किया। उन्होंने कहा कि श्रद्धा मनुष्य को सृजन की ओर ले जाती है और विश्वास उसमें निरंतरता प्रदान करता है। उन्होंने कई कहानियों के माध्यम से जीवन में सदैव इस श्रद्धा-विश्वास का सिंचन करते रहने की प्रेरणा दी।

श्रीमती प्रिया राधाकृष्णन जी ने दुभाषिये की भूमिका निभाते हुए उनके विचारों को मलयालय भाषा में व्यक्त किया।

अखण्ड ज्योति की सदस्यता का अभियान

श्रेष्ठाचार सभा के आचार्य श्री एम.टी.विश्वनाथन ने कहा कि अगले दिनों साधना की ऊर्जा ही समाज को ऊँचा उठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने आचार्य श्रीराम शर्मा जी के विचारों को 'अखण्ड ज्योति मलयालम' पत्रिका के माध्यम से केरल के घर-घर में पहुँचाने का अभियान चलाने की अपील की। उन्होंने वर्ष 2023 में 5000 नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है।

यज्ञ मंच पर स्वामी जीतात्मानन्द, डॉ. चिन्मय जी, श्री एम.टी. विश्वनाथन

स्वामी जीतात्मानंद जी ने चिन्मय मिशन के सिद्धांतों के साथ गायत्री परिवार के शिक्षा और विद्या के समन्वय सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डाला।

श्रीमती वासंती अम्मा जी ने शान्तिकुञ्ज युगतीर्थ, युग निर्माण योजना की संक्षिप्त जानकारी एवं डॉ. चिन्मय जी का परिचय मलयालम भाषा में प्रस्तुत किया। उन्होंने शान्तिकुञ्ज द्वारा मनाए जा रहे नारी सशक्तीकरण वर्ष को देश-दुनिया के लिए अत्यंत सुखद कदम बताया।

मंच संचालन श्री आनंदन मास्टर ने किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अखण्ड ज्योति पत्रिका मलयालम के सहसंपादक श्री के.वी. दीपेश को विशेष रूप से सम्मानित किया। श्री नगिन खाखरिया, श्रीमती रेणुका, श्री तखत सिंह राव, श्री देवेंद्र रणावत, श्री सुधीर जी के घर देवस्थापना करने पहुँचे।

त्रिशूर में गणमान्यों के संग आत्मीयता विस्तार

दिनांक 23 दिसंबर 2022 को ही आदरणीय डॉ. चिन्मय जी त्रिशूर गए। वहाँ वे कल्याण ज्वैलर्स के मालिक श्री टी.एस. कल्याणरमण एवं श्री राजेश कल्याणरमण के आवास पर देवस्थापना एवं युग साहित्य की स्थापना करने पहुँचे। श्री राजेश जी त्रिशूर के प्राचीन श्रीराम मन्दिर में दर्शन-पूजन के लिए लेकर गए, जहाँ केरल ब्राह्मण एसोशिएशन के सचिव श्री मूर्ति जी ने शॉल ओढ़ाकर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को सम्मानित किया। इससे पूर्व वेद पाठशाला के विप्र बटुक ब्रह्मचारियों ने वेदमंत्रों के संग शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की अगुवानी की।

24 दिसंबर को ही त्रिशूर के सुप्रसिद्ध गुरुवायुर मंदिर में दर्शन कर सर्वत्र सुख शांति और सद्बुद्धि की प्रार्थना की।

सुप्रसिद्ध कल्याण ज्वैलर्स के मालिकों के घर देवस्थापना और सुप्रसिद्ध गुरुवायुर मंदिर में दर्शन

गृहमंत्री एवं अन्य मंत्रियों से चर्चा

तत्पश्चात् उन्होंने गुरुवायुर में पुदुचेरी के माननीय गृहमंत्री श्री ए. नामसिवायम जी एवं मंत्रिमंडल के सदस्यों से मुलाकात कर उन्हें पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

मलयालम भाषा में साहित्य (पुस्तक) विमोचन

चार पुस्तकें-देवात्मा हिमालय, इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य, दीप महायज्ञ, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी का मलयालम भाषा में अनुवाद और प्रकाशन हुआ है। कोझीकोड़ के यज्ञ में डॉ. चिन्मय जी ने उनका विमोचन किया। अनुवाद और प्रकाशन में श्री ज्योतिष प्रभाकरण ने प्रमुख भूमिका निभाई है। श्री एम.टी. विश्वनाथन की मलयालम पुस्तक प्रश्नोत्तरी और उसके समाधान का भी विमोचन किया गया।

जिनके पास अच्छे विचारों का भण्डार है वे कभी निर्धन या एकाकी नहीं रहते।

वर्ष-2023 में नई संभावनाएँ को साकार होंगी

दिव्य भूमि शान्तिकुञ्ज के दर्शन कर नववर्ष का शुभारंभ करने पहुँचे साधकों को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने दी शुभकामनाएँ

वर्ष 2023 के पहले दिन गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर जप-ध्यान करते और श्रद्धेय द्वय से शुभकामना ग्रहण करते युग साधक

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज वह दिव्यभूमि है जो मानवीय उत्कर्ष के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन और आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है। यही कारण है कि प्रगतिशील विचारधारा वाले हजारों साधक अपने जीवन में नवीनता का उत्सव शान्तिकुञ्ज आकर ही मनाते हैं। जन्मदिन, विवाहदिन, वसंत पर्व, होली-दिवाली जैसे त्यौहारों पर साधकोचित जीवनचर्या अपनाते हुए आनन्द की अनुभूति करते हैं।

चैतन्य सिद्ध क्षेत्र शान्तिकुञ्ज में आकर नववर्ष-2023 का शुभारम्भ करने के लिए हजारों साधक-श्रद्धालु उपस्थित थे। सभी ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः...' की प्रार्थना के साथ जप, उदीयमान सूर्य का ध्यान, सूर्य अर्घ्यदान के साथ नववर्ष का स्वागत किया। तत्पश्चात् शान्तिकुञ्ज की 27 कुण्डीय यज्ञशाला में यज्ञ करते हुए सबके उज्ज्वल भविष्य और मानवमात्र के कल्याण की प्रार्थना की। अखण्ड दीप दर्शन के क्रम में श्रद्धेय डॉक्टर साहब, श्रद्धेया जीजी ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब का संदेश

यद्यपि भारतीय संस्कृति में नव संवत् का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, तथापि 1 जनवरी से अपने व्यावहारिक जीवन में कई तरह की नवीनताओं का शुभारम्भ होता है और हमें हर नवीनता का स्वागत अपनी श्रेष्ठ संस्कृति के अनुरूप ही करना चाहिए।

हमारी संस्कृति में हर नवीनता का उत्सव विकारों को मिटाने एवं साधनात्मक पथ अपनाते हुए जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने की परम्परा है। यही परम्परा अंग्रेजी नववर्ष के स्वागत की भी होनी चाहिए।

वर्ष-2022 अपने मिशन की दृष्टि से बहुत उत्साहवर्धक रहा, देश भी प्रगति की राह पर अग्रसर हुआ है। आने वाला वर्ष और भी सुखद संभावनओं से ओतप्रोत हो, ऐसी प्रार्थना हम पावन गुरुसत्ता से करते हैं। वर्ष-2023 नई चुनौतियाँ और नई संभावनाएँ लेकर आ रहा है। हम सभी बहुत से नए सोपान मिशन से जुड़ते देखेंगे। आँवलखेड़ा में एक भव्य स्मारक का लोकार्पण होता हम देखेंगे। सन् 2026 में मातृसत्ता की श्रद्धाञ्जलि का स्वरूप भी स्पष्ट होगा।

शान्तिकुञ्ज ने ठंड से ठिठुरते 320 साधुओं को कम्बल दिए

दिसम्बर 2022 के अंतिम सप्ताह और जनवरी के आरम्भिक दिनों में पूरा उत्तर भारत शीत लहर की चपेट में था। शान्तिकुञ्ज के समीप गंगातट पर रहने वाले सैकड़ों साधु-सन्यासी ठंड से ठिठुरते नजर आए। ऐसे में शान्तिकुञ्ज ने पीड़त मानवता की सेवा का धर्म निभाते हुए उनकी सहायता की पहल की, उन्हें ठंड से राहत दिलाने का यथा संभव प्रयास किया।

हरिद्वार में पारा गिरते ही श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने जरूरतमंदों के प्रति सहृदयता दिखाते हुए शान्तिकुञ्ज के आपदा प्रबन्धन दल के साथ चर्चा की और देर रात गंगातट पर जाकर ठंड का दंश झेल रहे लोगों को कंबल ओढ़ाने के निर्देश दिए। तद्नुसार 29 दिसम्बर की रात को टीम कंबल वितरण के लिए रवाना हुई। टीम ने पावन धाम, सर्वानंद घाट, भागीरथ बिंदु से लेकर ठोकर नं. 10 के निकट खुले आसमान एवं गंगातट में रहने वाले 320 साधुओं में कंबल बाँटे। श्री मंगल सिंह गढ़वाल, अरुण तोमर, राजेश गहलोत, विक्रम, आसमान नेताम ने इस पुनीत कार्य के लिए सेवाएँ प्रदान कीं।

मोदी जी को गढ़ने वाली महान माता 'हीरा बा' को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की माँ श्रीमती हीरा बा के निधन पर अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धेय द्वय ने हीरा बा को भारत में महापुरुषों को गढ़ने वाली महान माताओं में से एक बताया। इस अवसर पर उनकी कर्मठता, ईमानदारी, सादगी, परमार्थ परायणता और निःस्वार्थ कर्मयोग जैसे गुणों का स्मरण करते हुए कहा कि ऐसी माताएँ पुत्रों को जन्म ही नहीं दिया करतीं, बल्कि इतिहास रचा करती हैं।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने अपने संदेश में उन्हें एक दिव्य आत्मा बताया। नारी सशक्तीकरण वर्ष का उल्लेख करते हुए उन्होंने देश की सभी माता, बहिनों से उनके व्यक्तित्व से शिक्षा लेने की प्रेरणा दी, हीरा बा की आत्मा की शान्ति, सद्गति की प्रार्थना की।

गायत्री परिवार दक्षिण पूर्व एशिया का तृतीय वार्षिकोत्सव

क्वालालंपुर। मलेशिया

अखिल विश्व गायत्री परिवार दक्षिण पूर्व एशिया द्वारा 16, 17 एवं 18 दिसम्बर 2022 की तिथियों में तृतीय वार्षिकोत्सव (यूथ कैम्प) का आयोजन किया गया। इस वर्ष की विषयवस्तु थी 'नारी सशक्तीकरण'। पूरा कार्यक्रम ऑनलाइन ही सम्पन्न हुआ। दिनांक 16 दिसम्बर को आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी द्वारा दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारम्भ करने व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा जिज्ञासाओं के समाधान से लेकर अधिकांश प्रमुख उद्बोधन शान्तिकुञ्ज से वरिष्ठ और विशेषज्ञ कार्यकर्त्ता बहिनों के ही हुए।

श्रीमती शेफाली जी ने भारतीय नारी के गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराते हुए कहा कि हमें परम वंदनीया माताजी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के महान व्यक्तित्व का अनुसरण करना चाहिए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बीच प्रवास के समय इस शिविर से ऑनलाइन जुड़े। उनकी उपस्थिति ने सभी को भावविभोर कर दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने नारी सशक्तीकरण के संदर्भ में उन्हें शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य और संस्कारों की दृष्टि से सशक्त करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बहिनों को अपनी वकील खुद बनने एवं अपनी सहायता आप करने के लिए प्रेरित किया।

आदरणीया शेफाली जी शिविर के उद्घाटन सत्र को शान्तिकुञ्ज से सम्बोधित करते हुए

एक जिज्ञासु का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि पारिवारिक एवं पेशेवर जीवन में बेहतर सामंजस्य के लिए ध्यान एवं योग को दैनिक

नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित रहा शिविर

जीवन में स्थान देने की आवश्यकता है।

शान्तिकुञ्ज से श्रीमती शालिनी वैष्णव ने 'समय की माँग-सुसंस्कृत पीढ़ी का निर्माण' विषय पर एवं डॉ. अलका मिश्रा ने 'नारी स्वास्थ्य' विषय पर उद्बोधन दिये। क्षेत्रीय प्रवक्ताओं के रूप में श्रीमती छाया राणा, श्रीमती किंजल प्रजापति, श्रीमती पूनम सिंह और श्रीमती नेहा भावसार ने नारी उत्कर्ष सम्बन्धी विषयों पर उद्बोधन दिए। भारत में मध्य प्रदेश से श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव, झाँसी उत्तर प्रदेश से श्रीमती रंजना सक्सेना ने अपने कार्यानुभव साझा किए।

शिविर का समापन दीपयज्ञ से हुआ, जिसका सीधा प्रसारण शान्तिकुञ्ज से ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा किया जा रहा था।

शान्तिकुञ्ज के विदेश विभाग ने श्री राजकुमार वैष्णव जी के मार्गदर्शन में शिविर के सफल आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे सभी प्रतिभागियों से जुड़े, आवश्यक जानकारियाँ साझा की तथा शान्तिकुञ्ज की दैनिक गतिविधियाँ-अखंड दीप, गायत्री मंदिर आदि का सीधा दर्शन करवाया।

शिविर में 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया। इनमें उन्हें मुद्रा विज्ञान, वैदिक गणित, ललित कला एवं चित्रकारी से सम्बंधित मार्गदर्शन दिया गया। श्री अजय पाटीदार ने प्रेरणाप्रद कथाओं के ऑडियो-विजुअल दिखाए। क्षेत्रीय परिजनों के एक नाटिका से यज्ञ का महत्त्व समझाया।

कर्मठ परिव्राजकों की सक्रियता से परिपक्व हो रही हैं युग निर्माणी आस्थाएँ

हेमेट। संयुक्त राज्य अमेरिका

गायत्री चेतना केन्द्र हेमेट में सेवाएँ दे रहे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयराम मोटलानी और श्रीमती नीलम मोटलानी ने अथक परिश्रम के साथ क्षेत्र में युग निर्माणी आस्थाओं को भरपूर पोषण दिया है। परिजनों के घर यज्ञ, दीपयज्ञ, गृह प्रवेश, विविध कार्यक्रमों के माध्यम से अलग-अलग समूहों में युग संदेश दिया जा रहा है। श्रीमती उषा पटेल के घर शिव अभिषेक किया गया। श्रीमती उषा अग्रवाल द्वारा केन्द्र पर 24 घण्टे का अखण्ड रामायण पाठ रखा गया। श्रीमती अनुराधा व हितेंद्र जोशी के नए घर का वास्तु पूजन कराया गया। गीता जयंती पर श्रद्धेया जीजी का जन्म दिवस बड़े भक्तिभाव के साथ मनाया गया। 7 दिसम्बर को भगवान दत्तात्रेय की जयंती एवं

श्री विठल सगारे के संकल्प के माध्यम से सत्यनारायण कथा के आयोजन हुए।

गायत्री चेतना केन्द्र पर भी श्रद्धा-सक्रियता निरन्तर बनी रहती है। नियमित योग की कक्षा चलती है। ऑनलाइन कक्षाएँ ली जा रही हैं, व्हॉट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रति गुरुवार गायत्री महाविज्ञान के स्वाध्याय का क्रम चलाया जा रहा है।

मलेशिया में मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर दीपयज्ञ किया

गायत्री परिवार मलेशिया ने मार्गशीर्ष महा की पूर्णिमा के उपलक्ष्य में 8 दिसम्बर को पेटालिंग जाया शहर में स्थित शक्ति अम्मन मंदिर में दीपयज्ञ किया। इसके माध्यम से विशेष रूप में तमिल समुदाय में गायत्री चेतना का विस्तार करने में सफलता मिली। इस मंदिर में यह पहला दीपयज्ञ था, जिसमें भाग लेकर श्रद्धालुओं को दिव्यता की अनुभूति हुई। उन्होंने गायत्री परिवार के बारे में जानकारी ली। प्रसाद स्वरूप सभी को निःशुल्क साहित्य भेंट किया गया।

कार्यक्रम की योजना स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता श्री करुणाकरण जी के सहयोग से बनी, व्यवस्था एवं संचालन में श्री हेमंत वर्मा ने प्रमुख भूमिका निभाई।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.01.2023
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23